तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 13, अंक - 4, मार्च 2025 , मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

राष्ट्रीय बाल रंग प्रतियोगिता में हरियाणा की धूम

'स्वतंत्रता संग्राम में उनके अद्वितीय योगदान, ओजस्वी वाणी और राष्ट्रप्रेम को पूरा देश नमन करता है। उनकी कविताएँ और विचार हमेशा हमें प्रेरणा देते रहेंगे।

वे नारी सशक्तीकरण की प्रतीक थीं और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की अमिट धरोहर हैं। उनकी स्मृति को नमन करते हुए, आइये हम सभी उनके सपनों के भारत के निर्माण के लिए संकल्पबद्ध हों।

जय हिंद!'

शिक्षा सारथी

मार्च 2025

प्रधान संरक्षक
नायब सिंह
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
महीपाल ढांडा
शिक्षा मंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
पंकज अग्रवाल
प्रधान सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
डॉ. विवेक अग्रवाल
महानिदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

जितेंद्र कुमार
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद्

अमित कुमार
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिज़ाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Mini Ahuja on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/ s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd. at its printing press B-278, Okhla, Industrial Area, Phase -I,
New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"प्रशंसा हृदय से, हस्तक्षेप बुद्धिमत्ता से और प्रतिक्रिया विवेक से करने में ही समझदारी है।"

- भोपाल में हरियाणा की छोरियों का धमाल 5
- लोक-संस्कृति के संवाहक : सांस्कृतिक उत्सव 7
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप पाठ्यक्रम में होंगे बड़े बदलावः महीपाल ढांडा 13
- विदेशी डेलीगेशन ने किया अंबाला के प्राइमरी स्कूलों का दौरा 14
- धूमधाम से मनाया गया अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस 15
- बार-बार याद आएँगे केरल के समुद्री तट 16
- आईआईएम लखनऊ की टीम ने किया शिक्षकों को प्रशिक्षित 22
- चिंताजनक है बच्चों के साथ समय न बिताना 23
- बहुआयामी प्रतिभा के धनीः प्रदीप कुमार यादव 24
- हिरल वर्मा : तलवारबाजी में दक्ष, काव्य सृजन में सशक्त 25
- खेल-खेल में विज्ञान 28
- मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला 30
- सुखी कौन ? 31
- The Significance of Maha Shivratri 32
- Spring Season 34
- International Yoga Festival 36
- World Wildlife Day 38
- International Women's Day 40
- The Maha Kumbh Mela 42
- My Maha Kumbh Story 44
- The Learning Journey 47
- A Career in the Indian Police Force 48

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

संस्कृति के रंग और सृजनशीलता की उड़ान

मार्च अंक के साथ 'शिक्षा सारथी' अपने पाठकों के समक्ष एक ऐसी सांस्कृतिक यात्रा की झलक लेकर प्रस्तुत है, जो विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण की दिशा में मील का पत्थर साबित होती है। इस अंक की कवर स्टोरी राष्ट्रीय बालरंग उत्सव में भोपाल में आयोजित राष्ट्रीय मंच पर हरियाणा की टीम द्वारा श्रेष्ठ प्रदर्शन न केवल गौरव का विषय है, बल्कि यह प्रमाण भी है कि हमारी नई पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक जड़ों से कितनी गहराई से जुड़ी हुई है।

सांस्कृतिक उत्सव केवल मंच पर प्रस्तुति देने का माध्यम भर नहीं होते, बल्कि ये विद्यार्थियों को अनुशासन, टीम भावना और परस्पर समन्वय जैसे जीवन मूल्यों की शिक्षा भी देते हैं। इन उत्सवों के माध्यम से विद्यार्थी अपनी परंपराओं को आत्मसात करते हुए भारतीय संस्कृति के रंगों में रँग जाते हैं। लोक कला, नृत्य, संगीत और नाट्य कला के ये मंच विद्यार्थियों को आत्मविश्वास प्रदान करते हैं और उनमें सृजनशीलता के बीज अंकुरित करते हैं।

राज्य स्तरीय सांस्कृतिक उत्सव हों या किसी बड़े राष्ट्रीय मंच पर प्रस्तुति, इन आयोजनों का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि ये विविधता में एकता के मूलमंत्र को साकार करते हैं। देश के विभिन्न राज्यों से आए प्रतिभागी जब अपनी-अपनी लोक परंपराओं को प्रस्तुत करते हैं, तो यह अनुभव विद्यार्थियों को भारत की सांस्कृतिक समृद्धि से परिचित कराता है।

इन उत्सवों में भागीदारी से विद्यार्थियों में न केवल मंच पर प्रस्तुति देने का आत्मविश्वास आता है, बल्कि वे सामूहिकता, परिश्रम और सहनशीलता जैसे गुणों से भी समृद्ध होते हैं। कला के माध्यम से वे संवेदनशीलता को जीते हैं, जो उन्हें एक बेहतर इंसान बनने की दिशा में अग्रसर करती है।

हम आशा करते हैं कि हमारे विद्यार्थी इन सांस्कृतिक आयोजनों से प्रेरणा लेकर अपनी कला, संस्कृति और मूल्यों के प्रति और अधिक जागरूक बनेंगे। हमारी संस्कृति की यह धारा निरंतर प्रवाहमान रहे और नई पीढ़ी अपने कर्तव्यों के प्रति सचेत रहते हुए इन मूल्यों को आगे बढ़ाए, यही हमारी कामना है।

-संपादक

भोपाल में हरियाणा की छोरियों का धमाल

डॉ. प्रदीप राठौर

भोपाल में बीते दिनों आयोजित राष्ट्रीय बाल रंग प्रतियोगिता में हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग की टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए राष्ट्रीय स्तर पर दूसरा स्थान हासिल किया। इस प्रतियोगिता में इस वर्ष 22 टीमों ने भाग लिया, जिसमें 17 राज्य और 5 केंद्र शासित प्रदेशों की टीमें शामिल थीं।

लोक शिक्षण संचालनालय, स्कूल शिक्षा विभाग मध्य प्रदेश, भोपाल एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय श्यामला हिल्स भोपाल के तत्त्वावधान में प्रतिवर्ष इस राष्ट्रीय स्तर के उत्सव का आयोजन किया जाता है। यह महोत्सव भारत की शाश्वत संस्कृति का संदेशवाहक है। विदित है कि अनेकता में एकता भारतीय संस्कृति की विशेषता है। अपनी-अपनी सांस्कृतिक विशेषताओं के साथ विभिन्न प्रांतों के विद्यार्थी यहाँ पहुँचते हैं। इस उत्सव का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय एकता व अखंडता की भावना को प्रोत्साहित करना तथा राष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों के सांस्कृतिक मूल्यों एवं जीवन शैलियों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना है।

प्रतियोगिता में भाग ले रही 22 टीमों में से जिन टॉप टीमों का चयन किया गया वे क्रमशः रहीं- पांडिचेरी, हरियाणा और चंडीगढ़। मध्य प्रदेश और उत्तराखंड को सांत्वना पुरस्कार से ही संतोष करना पड़ा। हरियाणा की टीम के रूप में भाग ले रही लड़कियाँ राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, पुरानी सब्जी मंडी, यमुनानगर से थीं। विद्यालय की प्रधानाचार्या अमृत पाल कौर के नेतृत्व में, अमनप्रीत कौर (प्रोग्राम अधिकारी) के मार्गदर्शन में, मुकेश कुमार (कल्चरल कोऑर्डिनेटर, यमुनानगर) जोकि इस टीम के साथ नोडल अधिकारी के रूप में गए थे और शिवानी, सारिका, शहनाज़, भारत भूषण, जयकृष्ण, अजय और अंकित जो इस टीम के सदस्य थे, के सहयोग से विद्यालय की छात्राओं ने कमाल का प्रदर्शन किया।

हरियाणा की छोरियों ने विवाह संस्कार, बेटी की विदाई और नई दुल्हन के घर आगमन पर गाए जाने वाले गीतों के माध्यम से परंपरागत पहनावे के साथ-साथ हरियाणवी लोक संस्कृति को पूरी जीवंतता के साथ मंच पर उतारने का प्रयास किया। संगीत भी इतना प्रभावी था कि दर्शक भी झूमने को मजबूर हो गए।

प्रतियोगिता में मध्य प्रदेश का भगोरिया, छत्तीसगढ़ का थापरा, दादर नगर हवेली का तूर, गोवा का मसूल, सिक्किम का मारुणी, आंध्र प्रदेश का दंडालो आदिवासी

नृत्य, मणिपुर का छोलम, तेलंगाना का धिमसा, चंडीगढ़ का भांगड़ा और हरियाणा का धमाल देखने को मिला।

राष्ट्रीय स्तर की इस बाल रंग प्रतियोगिता ने काफी प्रतिष्ठा अर्जित की हुई है। गीत-संगीत का यह महोत्सव हर वर्ष दिसंबर या जनवरी माह में आयोजित किया जाता है। वास्तव में यह महोत्सव बच्चों में अपने देश और संस्कृति के प्रति सम्मान की भावना पैदा करने का एक बेहतरीन जरिया है तथा बच्चों में छिपी प्रतिभा को सामने लाने का एक सशक्त प्रयास है। ऐसे आयोजन निश्चित रूप से विद्यार्थियों के भावात्मक विकास के साथ-साथ उन्हें राष्ट्रीय एकता के सूत्र में भी बाँधते हैं। विद्यार्थी न केवल अपने प्रदेश की संस्कृति का प्रदर्शन करते हैं बल्कि दूसरे राज्यों की संस्कृतियों के विविध रंगों से भी परिचित होते हैं।

प्रतियोगिता में प्रतिभागी टीमों को प्रतियोगिता के नियमों व निर्देशों का पालन करना होता है। प्रतियोगिता की पहली शर्त यह है कि इसमें प्रतिभागी टीमों को अपने-अपने राज्य के परंपरागत नृत्य के साथ गायन भी परंपरागत वाद्य यंत्रों के साथ करना होता है। गत वर्षों की प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों को पुनः अगले वर्षों की प्रतियोगिता में भाग लेने की अनुमति नहीं दी जाती। प्रत्येक राज्य की टीम में अधिकतम 15 विद्यार्थी व पाँच अध्यापक/ प्रबंधकों को भाग लेने की अनुमति होती है। टीमों को अपनी-अपनी प्रस्तुति के लिए दस मिनट का समय दिया जाता है। विशेष बात यह है कि प्रस्तुति लाइव म्यूजिक पर होती है। सीडी और डीवीडी आदि की अनुमति नहीं होती।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में बच्चों में साहसिक एवं अनुशासन की भावना को मज़बूत करने के

लिये स्काउट कैंप भी लगाया गया। इनमें बच्चों ने जंगल कैंप, रिवर क्रॉसिंग, मंकीब्रिज, कमांडो ब्रिज, वॉचटॉवर, रॉक क्लाइंबिंग और वॉल रेपलिंग जैसी गतिविधियों में भाग लिया। बाल रंग के दौरान विजन-2047 थीम के अंतर्गत बच्चों द्वारा निर्मित शैक्षणिक सामग्री का प्रदर्शन किया गया। प्रतिभागियों को प्रदर्शनी में देश की विविधता वाली संस्कृति देखने का अवसर मिला। इनमें जीवन कौशल, एक भारत श्रेष्ठ भारत, खेलो इंडिया, श्री अन्न खाद्यान्न, व्यावसायिक शिक्षा से रोज़गार, अंतरिक्ष विज्ञान, जलवायु परिवर्तन आदि विषयों को प्रमुख रूप से शामिल किया गया था। बाल रंग में विभिन्न राज्यों के व्यंजनों के स्टॉल भी लगाये गये थे, जहाँ देश भर से आए विद्यार्थियों ने इनका आनंद लिया। साथ ही परिसर में हस्तशिल्प पर केन्द्रित प्रदर्शनी भी लगाई गई थी। बाल रंग में तात्कालिक भाषण, लोक गीत, शास्त्रीय नृत्य, सुगम संगीत, सामूहिक लोक नृत्य, दिव्यांगजन की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताएँ, वेद पाठ, नृत्य नाटिका, योग जैसी अनेक प्रतियोगिताएँ हुईं।

इस प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर हरियाणा की टीम को 75 हजार की पुरस्कार राशि और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। यह पुरस्कार न केवल टीम के लिए बल्कि पूरे हरियाणा राज्य के लिए एक गर्व का क्षण है। राज्य की लोक नृत्य और संगीत परंपराएँ बहुत ही समृद्ध हैं और यह उपलब्धि इन परंपराओं को दर्शाती है।

विद्यालय शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव श्री पंकज अग्रवाल, माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्री जितेंद्र कुमार व अतिरिक्त निदेशक श्रीमती अमृता सिंह ने छात्राओं की इस शानदार उपलब्धि पर उन्हें तथा उनके अध्यापकों को बधाई प्रेषित की।

drpradeeprathore@gmail.com

लोक-संस्कृति के संवाहक : सांस्कृतिक उत्सव

दीपा रानी

हम अक्सर बच्चों के सर्वांगीण विकास की बात करते हैं, पर यह विकास केवल किताबी ज्ञान से संभव नहीं। इसके लिए पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेना बहुत जरूरी है। ये क्रियाएँ और शैक्षिक गतिविधियाँ एक दूसरे की पूरक हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को अपनी प्रतिभा तराशने का भरपूर अवसर मिलता है। विद्यार्थियों के बहुमुखी विकास के लिए ये गतिविधियाँ अत्यंत आवश्यक है। प्रत्येक विद्यार्थी अपने आप में विशिष्ट होता है। कोई पढ़ने में रुचि लेता है तो कोई खेलने में, किसी को पेंटिंग करना पसंद है तो किसी को नृत्य या गायन। उनकी क्षमताओं और दक्षताओं की पहचान करके ही एक श्रेष्ठ शिक्षक कुशल मार्गदर्शक की तरह इन क्षमताओं और दक्षताओं को सुदृढ़ करके चरम तक पहुँचा देता है।

हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग विद्यार्थियों को गुणवत्तापरक शिक्षा देने तथा उनके सर्वांगीण विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है। इसके लिए समय-समय पर खेल प्रतियोगिताओं, एडवेंचर कैंप, कला उत्सव,

कल्चरल फेस्ट, चित्रकला प्रतियोगिता, बाल रंग जैसी अनेक पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन किया जाता है, परन्तु इन क्रियाओं में सबसे ज्यादा आकर्षण का केंद्र है- कल्चरल फेस्ट। कल्चरल फेस्ट यानी सांस्कृतिक उत्सव, जिसके माध्यम से विद्यार्थी हरियाणवी संस्कृति से रूबरू होते हैं।

हमारी लोक सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण, उसका संवर्धन तथा अगली पीढ़ी तक हस्तांतरित करने के लिए हरियाणा शिक्षा विभाग निरंतर प्रयासरत है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु वर्ष 2017-18 में कल्चरल फेस्ट

यमुनानगर में राज्य स्तरीय सांस्कृतिक उत्सव में भाग लेने का सुअवसर मिला। इस आयोजन ने हमारे राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और विविधता को दर्शाया। सांस्कृतिक उत्सव न केवल कला और साहित्य का उत्सव है, बल्कि यह हमारे समाज की एकता और भाईचारे की शक्ति को भी प्रदर्शित करता है। इस कार्यक्रम में छात्रों, कलाकारों और संस्कृति प्रेमियों की भागीदारी ने इसे और भी जीवंत बना दिया। हमारे राज्य में शिक्षा व्यवस्था और सांस्कृतिक पहलों को बढ़ावा देने के लिए ऐसे आयोजन बेहद महत्त्वपूर्ण हैं। हमें अपने भविष्य के लिए एक सशक्त और समृद्ध सांस्कृतिक आधार तैयार करना होगा। आशा है कि आने वाले समय में इस प्रकार के और भी आयोजन होंगे, जो हमारी युवा पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ने का काम करेंगे। उन सभी आयोजकों को बधाई, जिन्होंने इस शानदार कार्यक्रम को सफल बनाया।

महीपाल ढांडा
शिक्षा मंत्री, हरियाणा

की शुरुआत हुई, जिसके माध्यम से सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए अपनी कला और प्रतिभा दिखाने हेतु एक बहुत बड़ा मंच उपलब्ध करवाया गया। इस प्रतियोगिता में प्रतिभागियों के दो समूह बनाए गए। कनिष्ठ समूह में कक्षा पाँच से आठ के विद्यार्थी तथा वरिष्ठ समूह में कक्षा नौवीं से बारहवीं के विद्यार्थी भाग लेते हैं। इसमें विद्यालय स्तर से खंड स्तर, जिला स्तर और राज्य स्तर तक लोक नृत्य, लोकगीत, रागनी तथा स्किट प्रतियोगिताओं का आयोजन कराया जाता है। सभी प्रतिभागियों के लिए नकद पुरस्कार, प्रमाण पत्र, खाने-पीने और रहने की उचित व्यवस्था विभाग की ओर से की जाती है।

हरियाणा प्रांत के सभी विद्यालयों में सांस्कृतिक उत्सव का आगाज पूरे उत्साह, उमंग और तरंग के साथ होता है। हर कोई इसे देखने और इसमें भाग लेने को लालायित रहता है। सभी वर्ष भर इंतज़ार करते हैं कि यह प्रतियोगिता कब आयोजित होगी। आतुर हो भी क्यों न, आखिर यह हमारी लोक संस्कृति का झरोखा जो है।

हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी विद्यालय स्तर से लेकर राज्य स्तर तक कल्चरल फेस्ट का आयोजन बड़े उत्साह, ऊर्जा और धूमधाम से हुआ। सितंबर माह में सभी जिलों में जिला स्तरीय कल्चरल फेस्ट का आयोजन किया गया। जिला स्तर पर प्रथम स्थान हासिल करने वाली टीम (ग्रुप फोक डांस, फोक डांस सोलो, रागिनी और स्किट) राज्य स्तर पर अपनी प्रस्तुति के लिए जोर शोर से तैयारी करके आई थी।

तीन दिवसीय राज्य स्तरीय सांस्कृतिक उत्सव तत्कालीन मौलिक शिक्षा महानिदेशक आरएस ढिल्लों, माध्यमिक शिक्षा निदेशक जितेंद्र कुमार और मौलिक शिक्षा अतिरिक्त निदेशक अमृता सिंह के मार्गदर्शन में 30 नवंबर से 2 दिसंबर तक यमुनानगर जिले के दिल्ली पब्लिक स्कूल भंभोली में आयोजित हुआ। इस सांस्कृतिक महोत्सव की तैयारी लगभग 20 दिन पहले ही शुरू हो

गई थी। दिल्ली पब्लिक स्कूल के प्रांगण को दुल्हन की तरह सजाया गया था। विद्यालय में दाखिल होते ही हरियाणवी संस्कृति की झलक दृष्टिगोचर हो रही थी। प्रवेश द्वार पर ही 'म्हारा हरियाणा' सुनहरे अक्षरों में लिखा था, जो अनायास ही सभी का ध्यान आकर्षित कर रहा था। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ रहे थे, वैसे-वैसे हरियाणा के प्रसिद्ध स्थलों को स्टैंडी के रूप में दर्शाया गया था। चहुँ ओर हरियाणवी संस्कृति की छटा बिखरी हुई नज़र आ रही थी।

सुबह-सुबह शुरू हुआ रजिस्ट्रेशन का कार्य। जहाँ चहल-पहल देखते ही बन रही थी। सभी विधाओं के लिए अलग-अलग रजिस्ट्रेशन स्टॉल लगाए गए थे। रजिस्ट्रेशन के लिए सभी के बैठने की व्यवस्था सुव्यवस्थित थी। शिक्षक मंद-मंद मुस्कान लिए अपने कार्य में तल्लीन थे। रजिस्ट्रेशन पर प्रतिभागियों का स्वागत किया जा रहा था, उनका हालचाल पूछा जा रहा था। उन्हें उनके ठहरने की व्यवस्था, आयोजन स्थल, प्रतियोगिता संबंधी आदि सूचनाएँ उपलब्ध करवाई जा रही थीं। उनकी मंद-मंद मुस्कान और सहयोगात्मक दृष्टिकोण से प्रतिभागियों में गज़ब की ऊर्जा का संचार हो रहा था। प्रथम दिन कक्षा पाँच से आठ कनिष्ठ वर्ग की प्रतियोगिता आयोजित की

गई। नन्हे-मुन्ने विद्यार्थी हरियाणवी परिधान में अत्यंत मनमोहक लग रहे थे। स्कूल प्रांगण में हर एक विधा के लिए अलग-अलग मंच बनाए गए थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ पूर्व कैबिनेट मंत्री कँवरपाल गुर्जर ने दीप प्रज्ज्वलन से किया और उन्होंने इस सांस्कृतिक उत्सव में आए सभी प्रतिभागियों को अपनी शुभकामनाएँ दीं। कार्यक्रम स्थल अत्यंत ही आकर्षक था। चारों ओर हरियाणवी संस्कृति की अनुगूँज थी। सर पर सजी हुई रंग-बिरंगी पगड़ी, धोती-कुर्ता, घाघरा, बहुरंगी सितारे जड़ित चुंदड़ी, कंठी, गल्सरी, झालरा, बोरला, पाजेब, तगड़ी आदि लोक परिधान और आभूषण जो पाश्चात्य संस्कृति के अंधड़ में खो गए हैं, इस सांस्कृतिक उत्सव में दिखाई पड़ रहे थे। ढोल नगाड़े, मंजीरे, खड़ताल, बैंजो, सारंगी, डमरू, चिमटा, बीन, तुंबा आदि वाद्ययंत्रों की मधुर धुन और राग-रागिनियों की स्वर लहरियाँ इस उत्सव में सबको मंत्रमुग्ध कर रही थीं। ढोलक की थाप, घुँघरूओं की रुनझुन-रुनझुन और हरियाणवी धुनों और गीतों पर थिरकते छोटे-छोटे बच्चे समाँ बाँध रहे थे।

सांस्कृतिक उत्सव के दूसरे दिन कक्षा नौवीं से

बारहवीं (वरिष्ठ वर्ग) के विद्यार्थियों की प्रतियोगिता प्रारम्भ हुई। पंडाल लघु हरियाणा प्रतीत हो रहा था- न्यू लाग रया था, जणू म्हारा सारा हरियाणा आड़े कट्ठा हो रैया हो। हँसी-ठठे, चुहलबाजियाँ, हरियाणवी बोलियाँ - सारा दृश्य अत्यंत दर्शनीय था। उत्साहित विद्यार्थी हरियाणवी परिधानों में बड़े आकर्षक लग रहे थे। प्रतिभावान बच्चों की प्रस्तुति ऐसी कि उसे देख कोई भी दाँतों तले उंगली दबा ले। फोक डांस ग्रुप हो या सोलो, रागिनी हो या स्किट, सभी विधाओं में बच्चे अपना जौहर दिखा रहे थे। एक तरफ जहाँ फोक डांस ग्रुप और सोलो के बच्चे लोकगीतों पर थिरकते हुए समा बाँध रहे थे, वहीं रागिनी के बच्चों की प्रस्तुतियाँ रोंगटे खड़े कर देने वाली थीं और जब बात स्किट की आई तो बच्चों ने अपने जीवंत अभिनय से सबको आश्चर्यचकित कर दिया। उनके परिधान, भावभंगिमाएँ और स्किट के माध्यम से उनका समाज को संदेश देना अद्भुत था। हमारी हरियाणवी संस्कृति को संजोए और पर्यावरण की रक्षा का संदेश देते ये बच्चे सच में किसी मँजे कलाकार से कम नहीं लग रहे थे।

सांस्कृतिक उत्सव के तीसरे दिन की सुबह से ही दिल्ली पब्लिक स्कूल के प्रांगण में अपूर्व चहल-पहल देखी जा रही थी। सभी विद्यार्थी पंक्तिबद्ध सुव्यवस्थित ढंग से पंडाल में बैठे अपने परिणाम का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में माननीय शिक्षा मंत्री महीपाल ढांडा ने शिरकत की। उन्हें देख बच्चों की खुशी का ठिकाना नहीं था। शिक्षा निदेशालय से संयुक्त निदेशक नीरज शर्मा, कार्यक्रम

राज्य स्तरीय सांस्कृतिक उत्सव की मेज़बानी इस बार जिला यमुनानगर को मिली। इस सांस्कृतिक उत्सव में 22 जिलों के लगभग 2200 विद्यार्थियों व 300 कलाकारों ने भाग लिया। सभी प्रतिभागियों की प्रस्तुतियाँ अद्वितीय थीं। चाहे वह फोक डांस सोलो हो या ग्रुप, रागिनी हो या स्किट। इस महोत्सव में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को 50 हज़ार, द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को 30 हज़ार, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को 20 हज़ार और सांत्वना पुरस्कार के तौर पर 10 हज़ार की पुरस्कार राशि दी जाती है। माननीय शिक्षामंत्री महीपाल ढांडा ने सभी विजेता बच्चों को आशीर्वाद दिया तथा टीम यमुनानगर को इस सांस्कृतिक उत्सव के सफल आयोजन के लिए ढेर सारी बधाई व शुभकामनाएँ दीं। कक्षा 9 से 12 की ओवरऑल ट्रॉफी पर जिला यमुनानगर का कब्जा रहा और हमारे ग्रुप फोक-डांस की टीम इस बार राष्ट्रीय स्तर पर हरियाणा राज्य का प्रतिनिधित्व करेगी। यह हर्ष का विषय है कि सरकारी स्कूलों के विद्यार्थी पढ़ाई के साथ-साथ अन्य विधाओं में भी अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रहे हैं। सांस्कृतिक उत्सव का आयोजन हमारे लिए अनूठा अनुभव रहा।

धर्मेन्द्र चौधरी
जिला शिक्षा अधिकारी, यमुनानगर, हरियाणा

हरियाणा शिक्षा विभाग पंचकूला द्वारा शुरू किए गए सांस्कृतिक उत्सव विद्यार्थियों के लिए वास्तव में उपयोगी और लाभकारी सिद्ध हो रहे हैं। इस तरह के सांस्कृतिक उत्सवों से जहाँ हम एक समृद्ध राष्ट्र का निर्माण कर रहे हैं, वहीं बच्चों को सृजनात्मकता से जोड़कर उन्हें सफल नागरिक भी बना रहे हैं। पढ़ाई के साथ-साथ बच्चों का कला के प्रति रुझान बढ़ रहा है तथा उनमें छुपी हुई प्रतिभाएँ उजागर हो रही हैं। इस उत्सव से बच्चे हमारी हरियाणवी लोक संस्कृति से जुड़ रहे हैं और राष्ट्रीय स्तर पर हरियाणवी लोक संस्कृति को बुलंद कर अपने राज्य का परचम लहरा रहे हैं। इस सांस्कृतिक उत्सव के दौरान मुझे बहुत से बच्चों से रूबरू होने का मौका मिला। उनकी आँखों में खुशी, चेहरे पर मुस्कुराहट, अपनी संस्कृति के प्रति उनका लगाव और अपने गुरुजन के प्रति उनका आदर और सम्मान देखकर मुझे यह एहसास हुआ कि विभाग के प्रयास सही दिशा में हैं।

अमनप्रीत कौर, कार्यक्रम अधिकारी,
निदेशालय माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

हरियाणा की संस्कृति वैदिक काल से चली आ रही है। यहाँ गीत-संगीत, राग-रागनियों, धूमर-धमाल, साँग, लोक नाटक-कला, लोक परंपराओं, कला-प्रदर्शन, धार्मिक-संस्कारों एवं अनुष्ठानों, चित्रकारी एवं लेखन के क्षेत्रों में एक बहुत बड़ा संग्रह मौजूद है जो मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में जाना जाता है। इस सांस्कृतिक विरासत को सहेजने, संरक्षित करने, संवर्धन करने तथा अगली पीढ़ी तक हस्तांतरित करने हेतु हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग सांस्कृतिक उत्सव का आयोजन करता है। इसके माध्यम से निश्चित रूप से विद्यार्थी हमारी लोक कलाओं से परिचित होते हैं।

शिक्षण का उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है। शिक्षण केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं रहना चाहिए। पाठ्यसहगामी क्रियाएँ विद्यार्थी के बहुमुखी विकास में महती भूमिका अदा करती हैं। वस्तुतः सांस्कृतिक उत्सव हमारी संस्कृति का परिचायक है।

डॉ. अनिरुद्ध भट्ट
संस्कृत अध्यापक
राजकीय वमा विद्यालय कोट, ज़िला पंचकूला, हरियाणा

अधिकारी अमनप्रीत कौर और कार्यक्रम अधिकारी डॉ. पूनम अहलावत की गरिमामयी उपस्थिति रही। जिला शिक्षा अधिकारी यमुनानगर धर्मेंद्र चौधरी ने शिक्षा मंत्री का स्वागत किया। माननीय शिक्षा मंत्री के समक्ष बच्चों ने अपनी प्रस्तुतियाँ दीं जिन्हें देख मंत्री जी गद्गद हो उठे। इसी दिन सांस्कृतिक उत्सव के परिणाम घोषित किए गए।

श्री महीपाल ढांडा जी ने सभी विजेता टीमों को ट्रॉफी और प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया। कक्षा 5 से 8 के ग्रुप में ओवरऑल ट्रॉफी जिला कैथल तथा कक्षा 9 से 12 के ग्रुप में ओवरऑल ट्रॉफी पर जिला यमुनानगर का कब्जा रहा। जिस तरह सांस्कृतिक उत्सव का आगाज शानदार रहा, समापन भी उतना ही भव्य रहा। यह सांस्कृतिक उत्सव अगले वर्ष के लिए नव सपने, नव उम्मीदें, नव उमंगें व नई राहें छोड़ गया। बिछुड़ते हुए सब कह रहे थे, मिलते हैं फिर, नई आशाओं के साथ, नई रणनीतियों, नई तैयारियों के साथ, नए हौसले के साथ।

यह सांस्कृतिक उत्सव नई पीढ़ी में भावों, विचारों और नए बदलावों के ऐसे बीज बो गया जो आगे जाकर कला व सांस्कृतिक रुचि के विशाल वृक्ष बनेंगे। इस उत्सव के माध्यम से लोक संस्कृति को संरक्षण मिल रहा है। बच्चे लोक-नृत्य, राग-रागिनियों में पारंगत हो रहे हैं जिससे भविष्य में उच्च कोटि के कलाकार तैयार होंगे। यह एक सुखद एहसास है कि नई पीढ़ी हरियाणवी संस्कृति को दिल से अपना रही है। आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि ये सांस्कृतिक महोत्सव लोक संस्कृति को सहेज कर नए आयाम स्थापित करेंगे।

पीजीटी, फाइन आर्ट्स
रावमा विद्यालय सैक्टर-19, पंचकूला

शिक्षा हमारे जीवन का अनिवार्य अंग है। हर व्यक्ति को शिक्षित होना चाहिए। जिंदगी की सीख केवल किताबों से नहीं मिलती। इसके लिए अन्य गतिविधियों में भी भाग लेना उतना ही जरूरी है, जितना शिक्षण गतिविधियों में। हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग सरकारी स्कूलों में शैक्षिक पाठ्यक्रम के अलावा पाठ्य सहगामी क्रियाओं को भी निरंतर बढ़ावा दे रहे हैं,ताकि विद्यार्थियों में किताबी ज्ञान के साथ-साथ अन्य कौशल भी विकसित हो सकें। सरकारी स्कूलों के बच्चों के लिए सांस्कृतिक उत्सव हमारी हरियाणवी संस्कृति को सहेजने का सराहनीय आयोजन है, जिसकी झलक सांस्कृतिक उत्सव-2024 में देखने को मिली। जिस सांस्कृतिक संपदा के,संस्कारों के हम गवाह रहे हैं, उसे सुरक्षित रखना हम सबका कर्तव्य है। लोक-कला, लोक-साहित्य और लोक परंपराओं का फिर से सम्मान होगा, ऐसी हम उम्मीद कर सकते हैं।

विशाल सिंघल
नोडल अधिकारी, सांस्कृतिक उत्सव-2024

मैं शशि, राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पुरानी सब्जी मंडी यमुनानगर की छात्रा हूँ। सांस्कृतिक उत्सव- 2024 में मैंने अपनी टीम के साथ ग्रुप फोक डांस में भाग लिया। खंड स्तर और जिला स्तर पर प्रथम आने के बाद हमारी प्रस्तुति राज्य स्तर पर होनी थी। मेरे मन के किसी कोने में डर और घबराहट थी, परन्तु मेरे अध्यापकों ने मेरा और मेरी टीम का हौसला बनाए रखा। हम सब ने मिलकर खूब तैयारी की तथा कड़ी मेहनत की। राज्य स्तर पर जब हमारी प्रस्तुति हुई तो सब ने हमारी बहुत प्रशंसा की और जब हम राज्य स्तर पर प्रथम घोषित हुए तो मुझे विश्वास ही नहीं हुआ। मेरी और मेरी टीम की सभी सदस्यों की आँखों में खुशी के आँसू थे। माननीय शिक्षा मंत्री महीपाल ढांडा जी ने हमारे सिर पर हाथ रख हमें आशीर्वाद दिया। ये हम सभी के लिए अत्यंत भावुक पल थे। अब हम राष्ट्रीय स्तर पर भी अपना शत-प्रतिशत देंगे। मैं हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग की आभारी हूँ, जिन्होंने हमें मंच प्रदान किया ताकि हम हमारी हरियाणवी संस्कृति का परचम पूरे भारत में फैला सके।

शशि
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
पुरानी सब्ज़ी मंडी, यमुनानगर

मैं वंशिका राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सेक्टर- 26, पंचकूला की छात्रा हूँ। इस सांस्कृतिक उत्सव में भाग लेना और म्यूजिक सोलो विधा में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करना किसी सपने से कम नहीं। माननीय शिक्षा मंत्री जी ने जब मेरे सर पर हाथ रखा और कहा कि खूब तरक्की करो, तब वहाँ उपस्थित मेरे पिता जी की आँखों में आँसू आ गये। उन्होंने कहा कि उन्हें मुझ पर गर्व है। मेरी इस जीत पर मुझे सभी ने बहुत बधाई दी। मैं शिक्षा विभाग की धन्यवादी हूँ, जिन्होंने मुझ जैसी सामान्य परिवार की छात्रा को शानदार मंच प्रदान किया। मैं अपने गुरुजन को भी नमन करती हूँ, जिन्होंने मेरा मार्गदर्शन किया और मेरा हौसला बढ़ाया। शुक्रिया शिक्षा विभाग हरियाणा।

वंशिका
राजकीय आदर्श सांस्कृतिक वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
सेक्टर-26, पंचकूला

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप पाठ्यक्रम में होंगे बड़े बदलावः महीपाल ढांडा

हरियाणा के शिक्षा मंत्री श्री महीपाल ढांडा ने कहा है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू करने के लिए हरियाणा ने काफी तैयारियाँ पूरी कर ली हैं। हरियाणा ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति व उसके तहत होने वाले बदलावों को स्कूली स्तर तक पहुँचाने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति से भारत विश्व गुरु बनेगा, इससे शिक्षा के क्षेत्र में विशेष बदलाव आएगा।

शिक्षा मंत्री श्री महीपाल ढांडा ने बीते दिनों नई दिल्ली स्थित हरियाणा भवन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लेकर शिक्षा विभाग के उच्च अधिकारियों के साथ बैठक की। बैठक में उच्चतर शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव श्री विनीत गर्ग, तकनीकी शिक्षा विभाग के महानिदेशक श्री प्रभजोत सिंह, उच्चतर शिक्षा विभाग के निदेशक श्री राहुल हुड्डा, सेकेंडरी शिक्षा के निदेशक श्री जितेन्द्र कुमार सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

बैठक उपरांत मीडिया से बातचीत करते हुए शिक्षा मंत्री श्री महीपाल ढांडा ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह व पूर्व मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल का सपना है कि हरियाणा का युवा हिंदी अंग्रेज़ी तक ही सीमित न रहे, बल्कि हमारे युवा अंतरराष्ट्रीय भाषाओं को भी सीखें। विभाग दूसरी भाषाओं को सिखाने के लिए भी विचार कर रहा है।

उन्होंने कहा कि हरियाणा वैज्ञानिक, सांस्कृतिक और आर्थिक रूप से मज़बूत रहा है। अब शिक्षा को लेकर सरकार का विशेष फोकस है। नई शिक्षा नीति से देश में एक बड़ा बदलाव आ रहा है। उन्होंने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में बच्चों को जो वातावरण चाहिए, वे उपलब्ध करवा रहे हैं। स्कूलों में विद्यार्थियों की संख्या बढ़ाने, अध्यापकों की कमी को दूर करने के साथ स्कूल के वातावरण को सुधारने पर भी कार्य किया जा रहा है। शिक्षा मंत्री ने बताया कि उक्त बैठक में शिक्षा नीति के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई। जहाँ खामियाँ रही हैं, उन्हें दूर किया जाएगा। उन्होंने कहा कि हरियाणा में एक वर्ष के दौरान शिक्षा नीति को लागू करने के लिए उल्लेखनीय कार्य किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का सबसे बड़ा पहलू नए सिलेबस के अनुसार नई पुस्तकें लागू करने का है। पहली से तीसरी कक्षा तक एनईपी अलाईड बुक्स स्कूलों में लगाई जा चुकी हैं। नए शैक्षणिक सत्र से छठी कक्षा की एनईपी अलाईड बुक्स नई शिक्षा नीति के अनुरूप होगी। एनसीईआरटी से जो भी पुस्तकें उपलब्ध करवाई जाएँगी उन्हें तत्काल लागू कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति में अध्यापकों के पढ़ाने का तरीका भी बदल जाएगा। इसके लिए अध्यापकों को ट्रेनिंग भी दी जा रही है। शिक्षा विभाग निपुण कार्यक्रम के तहत हर बच्चे को ट्रैक कर रहा है।

बैठक में एनईपी-2020 के तहत स्कूल शिक्षा में किए गए कार्यों की समीक्षा की गई, जिसे छह अलग-अलग समूहों में बाँटा गया था। हर कार्य की पूर्णता की स्थिति का गहन विश्लेषण किया गया और आगे के कदम निर्धारित किए गए। उच्च शिक्षा क्षेत्र की समीक्षा में एनईपी के तहत उच्च शिक्षा के 16 महत्त्वपूर्ण कार्यों के कार्यान्वयन पर विचार विमर्श किया गया।

शिक्षा मंत्री ने हरियाणा की स्कूल शिक्षा में हासिल की गई महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों की प्रशंसा भी की। मंत्री ने तीन-भाषा सूत्र के महत्त्व पर ज़ोर दिया। बैठक में शिक्षकों की गुणवत्ता में सुधार करने पर फोकस किया गया।

-शिक्षा सारथी डेस्क

विदेशी डेलीगेशन ने किया अंबाला के प्राइमरी स्कूलों का दौरा

रहमदीन

बीती 17 फरवरी, 2025 को निपुण हरियाणा मिशन के तहत प्राइमरी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों का लर्निंग आउटकम जांचने व जेंडर आधारित सर्वे कार्य के लिए एकिडिना गिविंग व लैंगवैंज एंड लर्निंग फाउंडेशन (एलएलएफ) संस्था की ओर से एक टीम ने अंबाला के स्कूलों का दौरा किया। इस टीम में एकिडिना गिविंग संस्था की ओर से कैलिफोर्निया की एलसन, डेना एमिली व मीरा, नैरोबी की सारा रूटो व भारत से अर्जुन शामिल थे। इस टीम की अध्यक्षता एलएलएफ संस्था के संस्थापक व कार्यकारी निदेशक डॉ. धीर झिंगरन (पूर्व आईएएस) ने की। इस दौरे में एलएलएफ संस्था की निदेशक संयुक्ता और केन्द्रीय टीम से सुभो श्री मंडल ने भी शिरकत की। टीम ने जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी सुधीर कालड़ा के साथ राजकीय प्राथमिक विद्यालय बीसी बाज़ार, राजकीय प्राथमिक विद्यालय रतनगढ़ व राजकीय प्राथमिक विद्यालय लहारसा का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने बालवाटिका-3 से लेकर कक्षा तीसरी तक के बच्चों और शिक्षकों से मुलाकात की। उन्होंने प्राथमिक कक्षाओं के लिए बनाए गए पाठ्यक्रम, किताबों, बच्चों के लर्निंग आऊटकम, टीचरों के पढ़ाने के तरीकों के बारे में जानकारी हासिल की। इस दौरान उन्होंने बच्चों को निपुण बनाने व उन्हें भाषा सीखने में आ रही कठिनाइयों को दूर करने की रणनीतियों के बारे में भी जानकारी हासिल की।

विदेशी डेलीगेशन ने एलएलएफ संस्था से भी उनके प्रोजेक्ट कार्यक्रम, निपुण हरियाणा मिशन में उनकी भूमिका, मल्टीग्रेड शिक्षण की रणनीतियों, विद्यार्थियों की प्रगति को ट्रैक करने, आकलन करने की विभिन्न गतिविधियों आदि के बारे में विस्तार से चर्चा की। इस दौरान इस डेलीगेशन ने टीचरों द्वारा किए जा रहे नवाचर, स्मार्ट बोर्ड के प्रयोग के साथ-साथ शिक्षा विभाग व एलएलएफ संस्था के सहयोग से बनाई गई शिक्षक संदिर्शिका व कार्य पुस्तिकाओं की भी सराहना की। इस दौरान विद्यालय शिक्षा विभाग की शैक्षणिक शाखा के कार्यक्रम अधिकारी व निपुण हरियाणा मिशन के नोडल अधिकारी डॉ. प्रमोद कुमार ने डेलीगेशन के सदस्यों से मुलाकात की और उन्हें निपुण हरियाणा मिशन के लक्ष्यों व प्रगति के बारे में विस्तार से जानकारी दी। जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी सुधीर कालड़ा ने डेलीगेशन में शामिल सदस्यों को बताया कि बीते दिनों आई असर की रिपोर्ट में अंबाला जिले ने टॉप-3 में जगह बनाई है। उन्होंने इसके लिए एलएलएफ संस्था का आभार भी जताया। उन्होंने डेलीगेशन के सदस्यों को शिक्षकों के पढ़ाने के तरीकों, बच्चों के लर्निंग लेवल, मॉनिटरिंग सिस्टम, शिक्षकों की ट्रेनिंग, मैगा मॉनिटरिंग योजना, बच्चों की प्रगति की जाँच करने, मेंटर्स की स्कूल विज़िट, साप्ताहिक योजना, सावधिक आकलन आदि विषयों के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी। अंबाला के स्कूलों के दौरे पर आई विदेशी डेलीगेशन एकिडिना गिविंग अपनी सहयोगी संस्था एलएलएफ के साथ मिलकर हरियाणा के सभी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों के बीच जेंडर के आधार पर किए जाने वाले भेदभाव को समाप्त करने की दिशा में कार्य करना चाहती है ताकि लड़के और लड़कियाँ, दोनों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए समान प्रकार के अवसर उपलब्ध करवाए जा सकें और जेंडर के भेदभाव को समाप्त किया जा सके। एकिडिना गिविंग की बात करें तो यह संस्था विशेष रूप से लड़कियों को अनिवार्य व गुणवत्तापूर्ण स्कूली शिक्षा से जोड़कर उन्हें निपुण बनाने की दिशा में कार्य करती है। इस मौके पर एलएलएफ संस्था के स्टेट मैनेजर तुषार पुंडीर, जिला अंबाला के डीपीएम रवीन्द्र कुमार, एफएलएन विशेषज्ञ बलबीर सिंह, डीएएसी बलराम यादव, शान मोहम्मद, ललित शर्मा व अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम समन्वयक
लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन
शिक्षा सदन, पंचकूला

धूमधाम से मनाया गया अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

बीती 21 फरवरी 2025 को राज्य भर के राजकीय प्राइमरी विद्यालयों में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया गया। इस कार्यक्रम ने एक अद्वितीय सामाजिक और सांस्कृतिक अनुभव की नींव रखी। विद्यालयों में इस कार्यक्रम का आयोजन शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के दिशा-निर्देशों के तहत किया गया। यह न केवल मातृभाषा के महत्त्व को उजागर करने का एक सशक्त प्रयास था, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर और भाषाई विविधता को संरक्षित करने की दिशा में भी एक महत्त्वपूर्ण कदम साबित हुआ। इस कार्यक्रम की शुरुआत सभी प्राइमरी विद्यालयों में प्रार्थना-सभा से हुई, जिस में विद्यार्थियों ने एकजुट होकर अपनी मातृभाषा को संरक्षित करने का संकल्प लिया। इस अवसर पर शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों ने समुदाय के लोगों के साथ मिलकर अपनी मातृभाषा के महत्व पर सार्थक चर्चा की और यह संकल्प लिया कि वे इसे अपने जीवन का हिस्सा बनाएँगे।

इस दिन को बेहद खास बनाने के लिए प्राइमरी विद्यालयों में कई प्रकार की गतिविधियों का आयोजन किया गया। इस दौरान बच्चों ने अपनी मातृभाषा में कविताओं, कहानियों और नाटकों का मंचन किया, तो वहीं अभिभावकों ने भी मातृभाषा में लोक कथाओं, गीतों और कहानियों के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक धरोहर को स्कूली बच्चों के साथ साझा किया। इन गतिविधियों में बच्चों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की गई, जिससे वे अपनी मातृभाषा से जुड़ाव महसूस कर सकें। इसके अलावा इस दौरान स्कूलों में लोक गीतों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया जिस में माता-पिता और समुदाय के अन्य सदस्यों ने स्थानीय लोकगीतों और पारंपरिक नृत्य प्रस्तुत कर क्षेत्रीय संस्कृति को बढ़ावा देते हुए बच्चों को सांस्कृतिक विरासत के महत्त्व से अवगत करवाया। इस प्रकार के आयोजनों से विद्यालयों में न केवल मातृभाषा का सम्मान बढ़ा, बल्कि बच्चों में सांस्कृतिक जागरूकता और सामूहिक सहभागिता का भाव भी विकसित हुआ। इस दौरान की गई सभी गतिविधियों के आयोजन की फोटो, वीडियो निपुण हरियाणा के सोशल मीडिया चैनल्स पर प्रसारित की गईं ताकि पूरे राज्य में इस कार्यक्रम के आयोजन की जानकारी और प्रभाव को साझा किया जा सके।

बच्चों व अभिभावकों ने लिया रोचक गतिविधियों में भाग-

इस कार्यक्रम में बच्चों ही नहीं उनके अभिभावकों के लिए भी बेहद रोचक गतिविधियों का आयोजन किया गया था। बच्चों के माता-पिता, समुदाय के लोगों ने जहाँ स्कूल में जाकर बच्चों को उनकी मातृभाषा में कहानियाँ और चुटकुले सुनाए, तो वहीं इस कार्यक्रम में अभिभावकों ने बच्चों को स्थानीय भाषाई लोकगीतों व

उनकी धुनों से भी परिचित करवाया। इसके अतिरिक्त इस कार्यक्रम में मातृभाषा खेल, शब्द मिलान खेल, मातृभाषा की उपयोगिता पर चर्चा, अतिथियों से संवाद जैसे कार्यक्रम आयोजित किए गए। वहीं बालवाटिका-3 की कक्षाओं से लेकर पाँचवीं कक्षा तक के बच्चों के लिए मातृभाषा में बाल काव्य सम्मेलन, कविताएँ और कहानी सुनाना, ब्लैकबोर्ड पर अपनी मातृभाषा में कुछ पंक्तियाँ लिखना, ब्लैकबोर्ड को सजाना, कहानी, मुहावरे, कहावतें, शब्द शृंखला बनाना जैसी अनेक गतिविधियों का आयोजन किया गया। इस दिवस पर विद्यालय में आयोजित होने वाली गतिविधियों के दौरान शिक्षकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों और स्थानीय समुदाय के बीच की सामूहिक भागीदारी को देखकर यह कहा जा सकता है कि अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस न केवल एक शैक्षिक कार्यक्रम था, बल्कि यह एक सामाजिक आंदोलन की तरह प्रभावी साबित हुआ। इस प्रकार के कार्यक्रमों से यह सशक्त संदेश मिलता है कि हमारी मातृभाषाएँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं, जिनका संरक्षण और संवर्धन करना हम सभी का कर्तव्य है। प्रदेश के विद्यालयों ने इस अवसर को एक बड़ी सफलता के रूप में मनाया। इस कार्यक्रम में हर एक व्यक्ति ने अपनी सक्रिय भूमिका निभाई और मातृभाषा के प्रति अपना सम्मान और समर्पण व्यक्त किया। आशा है कि विद्यालय भविष्य में भी अपने स्तर पर भी ऐसे आयोजनों के माध्यम से अपनी मातृभाषा की महत्ता को और अधिक बढ़ावा देंगे।

-रहमदीन
कार्यक्रम समन्वयक
लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन
शिक्षा सदन, पंचकूला

बार-बार याद आएँगे केरल के समुद्री तट

संदीप कुमार

हरियाणा के सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के एक दल ने केरल का शैक्षिक भ्रमण किया, जो राष्ट्रीय साहसिक एवं तटीय प्रकृति अध्ययन शिविर का हिस्सा था। 13 पीएमश्री स्कूलों का राष्ट्रीय साहसिक एवं तटीय प्रकृति अध्ययन शिविर चेरथल्ला, अलाप्पुझा (केरल) में 25 दिसंबर से 29 दिसंबर, 2024 तक आयोजित किया गया। इसमें फरीदाबाद, गुरुग्राम और पलवल जिलों के कुल 130 छात्रों एवं छात्राओं ने प्रतिभागिता की। हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद् से सहायक सलाहकार डॉ. रामकुमार के मार्गदर्शन में इस दल में श्री सरवन सिंह, श्री राकेश कुमार, डॉ. सचिन कुमार, श्रीमती मंजू, श्री संदीप कुमार, श्री दिनेश गुलिया, श्रीमती रीना देवी, श्री सुरेश, श्रीमती सरोज देवी, श्री पीतांबर, श्री योगेश सोरोत व श्रीमती शारदा ने विद्यार्थियों के साथ अनुरक्षक अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के रूप में प्रतिभागिता की।

22 दिसंबर, 2024 की रात 130 प्रतिभागियों का यह दल निजामुद्दीन स्टेशन पर एकत्रित हुआ। यहाँ पर पहली बार हमारी टीम के सभी सदस्य आपस में परिचित हुए और शिविर के दौरान की गतिविधियों और यात्रा की रूपरेखा को साझा किया गया। अल सुबह मंगला लक्षद्वीप रेलगाड़ी के माध्यम से यात्रा शुरू हुई, जो सुबह 5:00 बजे निजामुद्दीन स्टेशन से रवाना हुई।

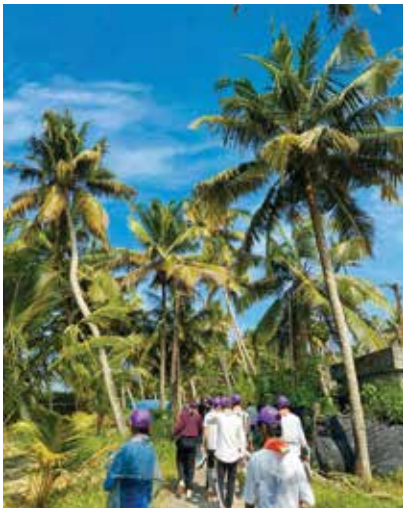

विद्यार्थियों के लिए निश्चित रूप से यह एक नवीन एवं अविस्मरणीय यात्रा थी। रेलगाड़ी को विभिन्न स्टेशनों से होते हुए विभिन्न राज्यों में प्रवेश करते हुए जाना था तो निःसंदेह विद्यार्थियों के लिए सीखने को बहुत कुछ था।

जिन स्थानों के नाम विद्यार्थियों ने अपनी पुस्तकों में पढ़े थे या फिर सुने थे उन स्थानों/स्टेशनों को विद्यार्थी अपने सामने देख पा रहे थे। उनके चेहरे की आभा बता रही थी कि वे कितने अधिक खुश थे। रेल यात्रा के दौरान, विद्यार्थियों ने विभिन्न राज्यों के प्राकृतिक दृश्य, वनस्पति, जलवायु, रहन-सहन एवं घरों की संरचना को देखा।

रेलगाड़ी के मडगाँव गोवा स्टेशन पर पहुँचते-पहुँचते नारियल के पेड़ रेलगाड़ी से ही दिखना शुरू हो गए थे जो कि हम सबको उत्साहित कर रहे थे। अब तो लगातार ही केले एवं नारियल के पेड़ अपनी हरियाली की छटा बिखेर रहे थे। इसके साथ-साथ विभिन्न लंबी-लंबी टनलों से भी हमारी रेलगाड़ी गुज़र रही थी जो कि हमें विचित्र एवं शानदार अनुभव करवा रही थी। केरल पहुँचते-पहुँचते हमारी रेलगाड़ी बहुत से पुलों से भी गुज़री, जोकि समुद्र के ही कुछ हिस्से थे।

इस अविस्मरणीय रेल यात्रा के बाद हम इस रेलगाड़ी के अंतिम स्टेशन एर्नाकुलम 25 दिसंबर, 2024 क्रिसमस के दिन पहुँचे। यहाँ पर कंटिजेंट लीडर के नेतृत्व में अनुरक्षक अध्यापक एवं अध्यापिकाओं द्वारा विद्यार्थियों को पंक्तिबद्ध करके अति व्यवस्थित एवं अनुशासित ढंग से विभाग द्वारा पहले से ही उपलब्ध करवाई गई बसों में बैठाया गया। यहाँ से अब हमें बसों द्वारा चैरथला नामक स्थान पर जाना था। यहाँ पर संत फ्रैंसिस एसीसी हाई स्कूल, अरथुंकल में हमारी रहने की व्यवस्था की गई थी एवं यहीं पर हमारी कैंपिंग होनी थी।

थोड़ी देर के लिए सभी को आराम करने का एवं तैयार होने का समय दिया गया एवं उसके तुरंत बाद हम एकत्रित हुए। डॉ. रामकुमार ने हमें सबसे पहले अगले पाँच दिनों में होने वाली सभी गतिविधियों के बारे में अवगत करवाया। इसके बाद भारत स्काउट एंड गाइड के नियम के अनुसार ध्वजारोहण करवाया गया एवं प्रार्थना गीत एवं झंडा गीत करवाया गया। यह कार्यक्रम भारत स्काउट एंड गाइड केरला के सहयोग एवं मार्गदर्शन में चल रहा था। केरल राज्य की टीम से श्री जोश प्रसाद, पीटर अलैक्जेंडर, लिनेट, मिनी, जी जी चंद्रन, गिरीश, जूली व मीरा आदि सभी व्यवस्थाओं को संभाल रहे थे।

शाम को हमें समुद्र किनारे ले जाया गया। जीवन में पहली बार समुद्र देखना किसी सपने के पूरे होने जैसा लग रहा था। समुद्र किनारे से सूर्यास्त देखना अपने आप में एक जीवन जी लेने जैसा है। आपका मन और आपकी आत्मा तृप्त हो जाती है एवं एक असीम शांति का

राष्ट्रीय शैक्षिक एवं तटीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन नई शिक्षानीति के उद्देश्य और दृष्टिकोण के अनुरूप था। इस शिविर ने छात्रों को एक ऐसा मंच प्रदान किया, जहाँ व्यावहारिक ज्ञान, अनुभव आधारित शिक्षा और सामाजिक जुड़ाव को प्रमुखता दी गई। नई शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य छात्रों को केवल पुस्तकों तक सीमित न रखकर उन्हें जीवन से जुड़े अनुभव प्रदान करना है और यह शिविर उसी दिशा में एक सकारात्मक कदम था। छात्रों ने निर्णय लेने की क्षमता, नेतृत्व और टीमवर्क जैसी महत्त्वपूर्ण जीवन-क्षमताओं को सीखा, बल्कि यह भी समझा कि शिक्षा का असली उद्देश्य उनके सामाजिक, मानसिक और शारीरिक विकास के साथ-साथ नैतिक मूल्यों को सशक्त बनाना है। भविष्य में विभाग ऐसे कार्यक्रमों को और विस्तार देगा।

जितेंद्र कुमार
निदेशक माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा व
राज्य परियोजना निदेशक
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद्

राष्ट्रीय तटीय और साहसिक अध्ययन शिविर का उद्देश्य यही था कि प्रतिभागियों को समुद्र तटों, घने जंगलों और प्रकृति के अन्य अद्वितीय रूपों का साक्षात अनुभव मिल सके। इस विचार से ही हमने प्रत्येक गतिविधि की योजना बनाई, ताकि यह न केवल शैक्षिक दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण हो, बल्कि रोमांचक और अनुभवजनक भी हो। हमने शिविर के दौरान हर गतिविधि को इस तरह से डिज़ाइन किया कि प्रतिभागियों के सामूहिक प्रयास, टीम वर्क और नेतृत्व कौशल को प्रोत्साहित करने का मौका मिले। समुद्र तट की सैर, साहसिक खेल और समूह चुनौतियाँ केवल शारीरिक चुनौतियाँ नहीं थीं, बल्कि इनसे हमारे प्रतिभागियों में आपसी मेलजोल, सहयोग और नए दृष्टिकोण विकसित करने का अवसर मिला।

डॉ. मयंक वर्मा
संयुक्त राज्य परियोजना निदेशक
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद्, पंचकूला

अनुभव होता है। समुद्र किनारे कुछ समय बिताने के बाद हम अपने शिविर में लौटे। उस शाम को हमें बेसिलका नामक स्थान पर ले जाया गया, जहाँ पर क्रिसमस को बड़े धूमधाम से मनाया जा रहा था।

शाम को कैंप फायर हुई। विद्यार्थी अपनी हरियाणवी वेशभूषा आदि लेकर गए थे, जिसमें उन्होंने समूह नृत्य एवं गायन की प्रस्तुतियाँ देकर समाँ बाँध लिया और इन दो तीन दिन के सफर की थकान को छूमंतर कर दिया। क्वार्टर मास्टर के रूप में श्री राकेश जी अपने कर्तव्य का निर्वहन कर रहे थे। इनकी देखरेख में ही रसोई

की व्यवस्था चल रही थी। राकेश जी की कुशल व्यवस्था के फलस्वरूप स्वादिष्ट भोजन प्राप्त हुआ एवं सभी प्रतिभागियों का स्वास्थ्य एकदम दुरुस्त रहा। पहला दिन था। सभी ने आराम से नींद ली।

श्री अमन कुमार जोकि भारत स्काउट एंड गाइड नेशनल हेडक्वार्टर द्वारा इस शिविर के लिए विशेष रूप से ट्रेनिंग देने के लिए भेजे गए थे, ने अगले दिन सुबह-सुबह सभी प्रतिभागियों को बीपी सिक्स एक्सरसाइज करवाई। अब समय था ट्रैकिंग का और ट्रैकिंग भी समुद्र किनारे। समुद्र किनारे छह-सात किलोमीटर ट्रैकिंग करवाई गई। विद्यार्थियों ने बहुत ही करीब से समुद्र देखा एवं समुद्र किनारे पड़ी हुई रेत पर चलकर विशेष अनुभव किया। रेलगाड़ी से नारियल एवं केले के पेड़ देखना एक अलग अनुभव था, लेकिन ट्रैकिंग के दौरान बिल्कुल करीब से यह वनस्पति देखना अद्भुत लग रहा था। ट्रैकिंग के बाद सभी प्रतिभागी वापस शिविर में आए एवं ग्राउंड में एकत्रित हुए। जहाँ कुछ थ्योरी कक्षाएँ चलीं, जिनमें माउंटेनियरिंग से संबंधित विभिन्न तथ्यों को विद्यार्थियों के साथ रूबरू करवाया गया।

आज शाम को हमें चेती बीच जिला अलेप्पी पर ले जाया गया और हमें अनुमति थी कि हम पानी में प्रवेश कर सकते हैं। समुद्र की लहरें बहुत खतरनाक होती हैं एवं यदि सावधानी न रखी जाए तो वे अपने साथ अंदर ले जाती हैं, लेकिन कुछ जगह जहाँ पर बीच बनाए जाते हैं, वहाँ पर कुछ दूर तक समतल जगह होती है। यहाँ पर आमजन को प्रवेश की अनुमति दे दी जाती है। आज हमें पता चला कि क्यों हमें कल पानी में प्रवेश करने से रोक दिया गया था। सभी प्रतिभागी विद्यार्थियों एवं अनुरक्षक अध्यापक एवं अध्यापिकाओं ने जमकर मस्ती की एवं समुद्र में खूब नहाए। अविस्मरणीय अनुभव में एक स्मृति और जुड़ गई थी।

एक टीम लीडर के रूप में, यह शिविर न केवल मेरे नेतृत्व कौशल को निखारने का अवसर था, बल्कि एक ऐसे समूह का मार्गदर्शन करने का भी अनुभव रहा, जिसने हर चुनौती को उत्साह और सहयोग के साथ स्वीकार किया। शिविर के पाँच दिनों ने हर प्रतिभागी को अपनी क्षमताओं को पहचानने और प्रकृति के करीब आने का मौका दिया। टीम के साथ समुद्र तटों की सैर, रोमांचक खेल, और समूह आधारित गतिविधियों में हिस्सा लेते हुए मैंने यह महसूस किया कि सामूहिक प्रयास और साझेदारी कितनी महत्वपूर्ण है।

सरवन सिंह (कंटिजेंट लीडर)
विज्ञान अध्यापक
राजकीय माध्यमिक विद्यालय पनौरी, जिला करनाल

राष्ट्रीय साहसिक और तटीय प्रकृति अध्ययन शिविर, केरल में बिताए गए पाँच दिन मेरे जीवन के सबसे यादगार अनुभवों में से एक हैं। यह शिविर छात्रों और शिक्षकों के लिए प्रकृति की सुंदरता को नजदीक से जानने और समझने का अनूठा अवसर था। समुद्र तटों, हरे-भरे जंगलों और केरल की सुरम्य प्राकृतिक छटा के बीच हमने रोमांच और शिक्षा का अद्वितीय अनुभव प्राप्त किया। ट्रेकिंग, समुद्री गतिविधियों और समूह खेलों ने न केवल हमें प्रकृति से जोड़ा, बल्कि टीम वर्क और नेतृत्व के महत्त्व को भी सिखाया।

राकेश कुमार
सीनियर लेक्चरर रेडक्रॉस एवं रिसोर्स पर्सन

केरल जाकर तटीय ट्रैकिंग और प्रकृति अध्ययन शिविर के दौरान मुझे जिंदगी का अब तक का सबसे शानदार अनुभव मिला। यह मेरे जीवन की ऐसी यात्रा थी जिसके लिए मेरी कामना रही कि बस यह अनवरत चलती रहे। वैसे हमेशा मुझे यही रहता है कि कुछ नया देखूँ, महसूस करूँ तथा अपना ज्ञानवर्धन करूँ। शिविर में सभी प्रतिभागी तथा स्टाफ सदस्य एक संयुक्त परिवार के सदस्यों की तरह एक दूसरे के पूरक बनकर हर कार्य को रुचि तथा आनंद के साथ कर रहे थे।

रीना देवी
इतिहास प्रवक्ता
पीएमश्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
कारोला, ज़िला-गुरुग्राम

समुद्र तट पर सैर, साहसिक खेल, और समूह चुनौतियों ने हमें न केवल रोमांच का अनुभव कराया, बल्कि सामूहिक प्रयास और नेतृत्व कौशल को भी प्रोत्साहित किया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के दौरान उत्तर और दक्षिण भारत की परंपराओं और रीति-रिवाजों का संगम देखना एक अनूठा अनुभव रहा। यह न केवल विविधता में एकता की भावना को प्रबल करता है, बल्कि हमारी सांस्कृतिक जड़ों से भी जोड़ता है। यह यात्रा मेरे लिए एक नई शुरुआत और जीवन में सीखने का एक स्थायी स्रोत बन गई है।

मंजु
गणित प्राध्यापिका
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय खरहर, जिला झज्जर

रोज़ की तरह आज शाम को फिर से कैंप फायर था। आज व्यवस्थित ढंग से कैंप फायर का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में अरथुंकल गाँव के सरपंच को आमंत्रित किया गया था एवं केरल टीम से सभी स्काउट एंड गाइड ऑफिसर्स एवं केरला ऑर्गेनाइजिंग टीम के सभी सदस्य मौजूद थे। इस प्रकार एक शानदार दिन बीताने के बाद सभी प्रतिभागी सो गए। इसी प्रकार नियमबद्ध एवं व्यवस्थित तरीके से हमारे पाँच दिन गुजरने थे। दिन-ब-दिन ट्रैकिंग और ज्यादा शानदार होती जा रही थी एवं वहाँ की वनस्पति, जलवायु, वातावरण

प्रकृति के सान्निध्य में रहकर प्रतिभागियों ने अद्भुत और यादगार क्षणों का आनंद लिया तथा आपसी सहयोग और सौहार्द के साथ पाँच शानदार दिन बिताए। केरल आयोजन समिति की उत्कृष्ट व्यवस्थाएँ विशेष रूप से सराहनीय थीं। हर गतिविधि को इतने व्यवस्थित और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया कि यह कार्यक्रम हर रूप में उत्कृष्ट प्रतीत हुआ। यह शिविर न केवल प्रकृति और संस्कृति को करीब से जानने का माध्यम बना, बल्कि जीवन में अविस्मरणीय यादें भी जोड़ गया। निःसंदेह, यह अनुभव मेरे जीवन के सबसे अनमोल पलों में से एक रहेगा।

सुरेश कुमार
असिस्टेंट प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर
जिला फरीदाबाद

पाँच दिनों तक प्रकृति की गोद में रहकर हमने न केवल रोमांचक गतिविधियों का आनंद लिया, बल्कि एकजुटता और आपसी सहयोग का भी गहरा अनुभव किया। कार्यक्रम की आयोजक टीम की मेहनत और प्रबंधन वाकई प्रशंसनीय थे। प्रत्येक गतिविधि को इतनी कुशलता और व्यवस्थित तरीके से संपन्न किया गया कि शिविर के हर पल ने नई ऊर्जा और उत्साह भर दिया। निश्चित रूप से यह शिविर मेरे जीवन के उन अनमोल अनुभवों में से एक है, जिसे मैं हमेशा याद रखूँगा।

दिनेश गुलिया
असिस्टेंट प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर
जिला गुरुग्राम

कार्यक्रम की आयोजक टीम का समर्पण और बेहतरीन प्रबंधन प्रशंसा के योग्य था। हर गतिविधि को इतनी कुशलता से संचालित किया गया कि शिविर के प्रत्येक क्षण ने हमें कुछ नया सिखाया। शिविर का यह अनुभव केवल प्रकृति के करीब आने तक सीमित नहीं रहा। यह एक ऐसा मौका था जिसने हमें किताबों में पढ़ी बातों को वास्तविक जीवन में देखने और महसूस करने का अवसर दिया। यह शिविर मेरे लिए प्रेरणा, रोमांच और यादों का एक खूबसूरत सफर रहा। यह अनुभव हमेशा मेरे दिल में बसा रहेगा, और मुझे आगे बढ़ने के लिए उत्साहित करता रहेगा।

योगेश सौरोत
जिला कोऑर्डिनेटर
यूथ एंड इको क्लब, पलवल

केरल में आयोजित राष्ट्रीय साहसिक और तटीय प्रकृति अध्ययन शिविर मेरे जीवन के सबसे अद्वितीय और प्रेरणादायक अनुभवों में से एक था। पाँच दिनों तक प्राकृतिक वातावरण में बिताया गया समय न केवल रोमांच से भरपूर था, बल्कि सीखने और आत्मविकास का भी शानदार माध्यम था। इस दौरान, हमने न केवल नई जगहों का अन्वेषण किया, बल्कि आपसी सहयोग, सौहार्द और एकता के महत्त्व को भी महसूस किया। यह शिविर मेरे लिए एक प्रेरणा, रोमांच और यादों से भरा अनुभव रहेगा। इस अनुभव ने मुझे जीवन को नई ऊर्जा और उत्साह के साथ जीने के लिए प्रेरित किया।

पीतांबर सिंह
असिस्टेंट प्रोजेक्ट कोर्डिनेटर
ज़िला- पलवल

एवं समुद्र से एक रिश्ता बन गया था जैसे हमारी दोस्ती सी हो गई थी। समुद्र किनारे खड़ी एवं समुद्र में तैरती हुई नावों को देखना हमारे लिए एक रोचक अनुभव था। नावों को करीब से देखा गया एवं उनकी बनावट को सभी विद्यार्थियों ने करीब से समझा। वहाँ के स्थानीय लोगों का मुख्य कार्य मछली पकड़ कर अपना जीवनयापन करना है।

राष्ट्रीय साहसिक एवं तटीय प्रकृति अध्ययन शिविर

के दौरान यूथ एंड इको क्लब मिशन फॉर लाइफ के अंतर्गत विद्यार्थियों की पेंटिंग प्रतियोगिता करवाई गई, जिसमें पर्यावरण संरक्षण संबंधित विषय को रखा गया एवं विद्यार्थियों ने कमाल की पेंटिंग्स बना डालीं। विशेष बात यह थी कि कुछ विद्यार्थियों ने समुद्र किनारे से एवं आसपास के जंगल से ही सामान आदि इकट्ठा करके एवं उनको शीटों पर चिपका करके पेंटिंग्स बनाईं जो देखने में अद्भुत थीं। विद्यार्थियों में छिपी प्रतिभा का एक और स्वरूप हमें तब दिखाई दिया, जब हमने उनको रंगोली बनाने के लिए कहा। लेकिन इन रंगोलियों को बनाने के लिए उनको रंग नहीं दिए गए थे, बल्कि आसपास की वस्तुओं से ही उनको रंगोली बनाने के लिए कहा गया। विद्यार्थियों ने आसपास से रेत, कंकर, बजरी, सूखे पत्ते, सूखे घास आदि इकट्ठे किए एवं उनसे अद्भुत कृतियाँ बना डालीं, जोकि देखने में अद्भुत थीं।

कैंप के दौरान हमें पाधिरामणल द्वीप का भ्रमण भी करवाया गया जो कि अद्भुत था। पाधिरामणल का शाब्दिक अर्थ होता है मिडनाइट सेंड। इसके लिए कैंपसाइट से बसों में हमें समुद्र किनारे तक ले जाया गया । उसके बाद 40-40 विद्यार्थियों के दल को फैरीज में बैठाया गया। समुद्र किनारे से इन बड़ी कश्तियों में द्वीप तक जाना निःसंदेह शानदार अनुभव था। जब सभी प्रतिभागी वहाँ पर पहुँच गए तो वहाँ पर मोहमा गाँव के सरपंच एवं पंचायत सदस्यों ने हमारा स्वागत किया। इसके साथ-साथ वहाँ पर उन्होंने एक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी रखा हुआ था, जिसमें कुछ विद्यालयी छात्र एवं छात्राओं ने केरल की सांस्कृतिक प्रस्तुति दी। हमारे विद्यार्थियों को भी स्टेज पर प्रस्तुति देने का अवसर प्रदान किया गया और विद्यार्थियों

ने कमाल की प्रस्तुतियाँ दीं। कार्यक्रम में प्रस्तुतियों की पराकाष्ठा अपने चरम पर थी, जब हरियाणा के विद्यार्थियों ने मलयालम भाषा में अपनी प्रस्तुति दी एवं केरल के विद्यार्थियों ने हरियाणवी गीतों पर नृत्य करके दिखाया। इस समय यह भेद कर पाना बड़ा मुश्किल हो रहा था कि कौन सा विद्यार्थी कौन से राज्य का है।

पाँच दिन कैसे बीत गए यह प्रतिभागियों को पता ही नहीं चला। असीमित रोमांच, असीमित सीखना, असीमित आनंद के बाद कार्यक्रम का विधिवत् समापन हुआ। आखिरी दिन शाम को ग्रैंड कैंप फायर का आयोजन किया गया जिसमें सभी बेस्ट परफॉर्मेंस दोबारा से करवाई गईं एवं शिविर से बेस्ट कैंपर्स एवं बेस्ट एस्कॉर्ट टीचर्स को सम्मानित किया गया। एक सफल कार्यक्रम का आनंद प्राप्त करने के बाद सभी प्रतिभागी एक नई उमंग, नये जोश एवं नई ऊर्जा के साथ वापस लौटे। हम सब वापस लौट रहे थे जीवन भर याद रहने वाली यादें लेकर, हम लौट रहे थे अद्भुत दृश्य एवं एक अलग संस्कृति से रूबरू होकर, हम लौट रहे थे इन पाँच दिनों में पूरे वर्ष के बराबर सीख कर, हम लौट रहे थे हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद् को धन्यवाद देते हुए, हम लौट रहे थे झूमकर गाकर, जी हाँ हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा चलाए गए इस कार्यक्रम की कड़ी में राष्ट्रीय शैक्षिक एवं तटीय प्रकृति अध्ययन कार्यक्रम की सफलता लेकर हम लौट रहे थे।

ललित कला प्रवक्ता
राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
नलवा, हिसार, हरियाणा

विद्यार्थियों के अनुभव

हम सबने जो रोमांचक गतिविधियाँ कीं, वे सचमुच अद्भुत थीं। केरल के लोग बहुत स्नेही और प्यारे थे। वहाँ की गतिविधियाँ जैसे कैंप फायर, ट्रैकिंग और खूबसूरत सूर्यास्त देखना मेरे लिए हमेशा यादगार पलों में शामिल रहेंगे। और सबसे महत्त्वपूर्ण बात, जो मैंने सबसे ज्यादा पसंद की, वह थी वहाँ का भोजन। मैं अपने अनुभवों को शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती, क्योंकि हर एक पल मेरे दिल में बसा हुआ है। मैं ऐसा अनुभव जीवन में बार-बार लेना चाहूँगी। सचमुच यह अनुभव अद्भुत था।

दिया
पीएमश्री वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, घामड़ौज, अलीपुर, गुरुग्राम

यह कैंप मेरे जीवन का एक अनमोल अनुभव रहा। वहाँ हम ने न केवल प्रकृति के अद्भुत रूपों को देखा, बल्कि पेड़-पौधों और उनके महत्त्व के बारे में भी बहुत कुछ सीखा। सभी बच्चों ने यहाँ पर विभिन्न प्रकार के पौधों को देखकर और उनकी जानकारी लेकर भरपूर आनंद लिया। इस कैंप में कई रोमांचक प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं, जिनमें बच्चों ने उत्साह से भाग लिया। मेहंदी प्रतियोगिता, पेंटिंग, और अन्य गतिविधियाँ हमें न सिर्फ मनोरंजन का अवसर देती थीं, बल्कि हमारी रचनात्मकता को भी प्रोत्साहित करती थीं।

दिव्या
पीएमश्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, कारोला गुरुग्राम

प्रकृति अध्ययन, ट्रैकिंग, कैंप फायर, बोटिंग, पेंटिंग, और प्रकृति से वस्तुएँ बनाना जैसी गतिविधियाँ हमारे लिए अविस्मरणीय रहीं। हमने यह भी सीखा कि बिना किसी हानि के पेड़-पौधों से रंगोली बनाना कितना महत्त्वपूर्ण है। हमने केरल में वहाँ के लोगों के जीवन को करीब से देखा। समुद्र से मछलियाँ पकड़ने और मछलियों की विभिन्न प्रजातियों को जानने का अनुभव अनमोल था। यह मेरी पहली बार ऐसी यात्रा थी जहाँ मैं घर से दूर इतने दिन अकेले अपने साथियों के साथ मिलकर रहा।

लक्की
पीएमश्री सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूल, असावटी (पलवल)

इस कैंप के माध्यम से मुझे प्रकृति को नज़दीक से देखने और महसूस करने का अवसर मिला। प्रकृति की सुंदरता को देखना और उसका अनुभव करना एक ऐसी शांति प्रदान करता है, जो मैंने पहले कभी महसूस नहीं की थी। यहाँ मैंने प्रकृति का नया रूप देखा, जो मेरे सामान्य ज्ञान में वृद्धि करने का एक अनमोल अवसर था। इस कैंप ने हमें अनुशासन का महत्त्व भी सिखाया। हमने समझा कि अनुशासन हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा है, जो हमारे कार्यों को सही दिशा में निर्देशित करता है।

संजना
पीएमश्री गवर्नमेंट गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, एनआईटी नंबर-2, फरीदाबाद

इस यात्रा में हमने विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ देखीं और उन पेड़-पौधों के बीच बैठकर उनका अहसास किया और प्रकृति के साथ एक जुड़ाव महसूस किया। समुद्र को निहारते हुए, उसकी लहरों में एक अलग सी आवाज़ सुनाई दी, जो हमारे अंदर एक गहरी शांति का अहसास कराती थी। हमने वहाँ के लोगों की मछली पकड़ने की तकनीक देखी और मछलियों के विभिन्न प्रकारों के बारे में अध्ययन किया। यह यात्रा बहुत ज्ञानवर्धक थी।

पावनी
पीएमश्री गवर्नमेंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल, चकरपुर, गुरुग्राम

केरल अपनी समृद्ध जैव विविधता के लिए प्रसिद्ध है और यही कारण है कि इसे तटीय अध्ययन के लिए एक आदर्श स्थान माना जाता है। यहाँ के तटीय इलाकों में प्रकृति अध्ययन से संबंधित कई महत्त्वपूर्ण पहल और गतिविधियाँ संचालित की जाती हैं, जो हमें प्रकृति के और भी करीब लाती हैं। हमने इस यात्रा में समुद्री क्षेत्र का अध्ययन किया और साथ ही हमें यह सौभाग्य भी मिला कि हम वहाँ के लोगों की जीवन शैली और उनके व्यवसाय के बारे में जानकारी प्राप्त कर सके।

मनीष
पीएमश्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, पलवल

आईआईएम लखनऊ की टीम ने किया शिक्षकों को प्रशिक्षित

हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद् ने शिक्षकों के कौशल को बढ़ाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम उठाया है। आईआईएम लखनऊ के साथ साझेदारी में परिषद् ने कैरियर मार्गदर्शन और परामर्श पर विषय विशेषज्ञों के लिए एक विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया है। इस कार्यक्रम की रूपरेखा हरियाणा स्कूल शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव श्री पंकज अग्रवाल आईएएस के मार्गदर्शन में तैयार की गई है। जिसका संचालन हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद् के राज्य परियोजना निदेशक श्री जितेन्द्र कुमार द्वारा किया गया। इसके सफल संचालन की जिम्मेदारी संयुक्त राज्य परियोजना निदेशक डॉ. मयंक वर्मा, सलाहकार संजय कुमार और परियोजना समन्वयक सोनाली वोहरा को सौंपी गई थी।

आईआईएम लखनऊ में 3 से 7 फरवरी तक आयोजित पाँच दिवसीय कार्यक्रम में हरियाणा के विभिन्न जिलों से 18 प्रतिभागी शामिल हुए। प्रशिक्षण सत्रों का नेतृत्व आईआईएम के प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय संकाय, आईएएस अधिकारियों सहित एनसीईआरटी नई दिल्ली के विशेषज्ञों द्वारा किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों को छात्रों को बेहतर मार्गदर्शन देने और शिक्षा प्रणाली में प्रभावी रूप से योगदान देने के लिए उन्नत कौशल से लैस करना था।

शिक्षकों के नेतृत्व और प्रबंधन कौशल को बढ़ाया जाएगा-

प्रशिक्षण के जरिए स्कूल प्रशासन को बेहतर बनाने के लिए शिक्षकों के नेतृत्व और प्रबंधन कौशल को बढ़ाया जाएगा। छात्रों को प्रभावी कैरियर मार्गदर्शन और परामर्श प्रदान करने के लिए शिक्षकों को कौशल प्रदान किया गया। प्रशिक्षित शिक्षक राज्य में कार्यक्रम को लागू करने के लिए प्रमुख संसाधन व्यक्ति (केआरपी) के रूप में कार्य करेंगे। विभाग स्कूलों के लिए एक विशेष पाठ्यक्रम विकसित करने की योजना बना रहा है। यह पहल शिक्षा के क्षेत्र में हरियाणा सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। शिक्षकों को उन्नत कौशल से सशक्त बनाकर, सरकार का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि शिक्षक छात्रों को उनके शैक्षणिक और कैरियर की खोज में मार्गदर्शन और सहायता करने के लिए अच्छी तरह से सुसज्जित हों। परियोजना समन्वयक सोनाली वोहरा बताती हैं कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में अभी प्रदेशभर से 18 शिक्षकों को शामिल किया गया, जिन्हें मास्टर ट्रेनर के तौर पर तैयार किया गया है। अब ये मास्टर ट्रेनर अपने-अपने जिले के शिक्षकों को ट्रेनिंग देकर ट्रेंड करेंगे। फिर वे शिक्षक बच्चों को करियर काउंसलिंग के प्रति जागरूक करेंगे।

-शिक्षा सारथी डेस्क

होली

अलौकिक आनंद लाती होली
प्रेम का संचार करती होली।
घृणा-द्वेष आपस का हरने को
स्नेह-सौहार्द बिखेरती होली।

गहन मलिन मन के उपवन में भी
नेकी का फूल खिलाती होली।
धरा से नीरसता को मिटाकर
हर्ष-उल्लास फैलाती होली।

अधर्म-अन्याय के पराभव की
कहानी सबको सुनाती होली।
सत्य-सच्चाई की विजय ध्वजा
फहराना हमें सिखाती होली।

जात-पात के भेद को भूलकर
एका का पाठ पढ़ाती होली।
छोटे-बड़े का भाव बिसराकर
समता की धार बहाती होली।

आसमान छूने के सपनों को
सतरंगी पंख लगाती होली।
जग में अपनी पहचान बनाना
प्रेरणा का गीत गाती होली।

-कल्याणमय आनंद
उत्क्रमित मध्य विद्यालय निझरा, सोनैली
कटिहार-855114 (बिहार)

चिंताजनक है बच्चों के साथ समय न बिताना

प्रियंका सौरभ

बच्चों के साथ पर्याप्त समय न बिताना और उनकी बातों को अनदेखा करना उन्हें अत्यधिक तनाव में डाल सकता है। उन पर चिल्लाना या बात करने से पहले उन्हें दोष देना उनके तनाव को बढ़ा सकता है और उन्हें अपने प्रियजन से नाराज़ कर सकता है। उनके अच्छे और बुरे दोनों गुणों को अनदेखा करने से अवसाद की भावनाएँ उत्पन्न हो सकती हैं। साथ ही, उन्हें दूसरे बच्चों के साथ घुलने-मिलने से रोकना या खराब ग्रेड के लिए शिक्षकों द्वारा आलोचना किए जाने पर वे एक अंधकारमय मानसिक स्थिति में जा सकते हैं। दुखद है कि कुछ बच्चे इन दबावों के कारण आत्महत्या करने के बारे में भी सोचने लगते हैं। यह बात बच्चों के साथ हमारी चर्चाओं में सामने आई, जिन्होंने अपने माता-पिता से जुड़ी कई समस्याओं को साझा किया। उनके परिवारों से बात करने पर पता चला कि इनमें से कई बच्चे एकल-अभिभावक वाले घरों से आते हैं। संयुक्त परिवारों में रहने वाले ज़्यादा बच्चे नहीं थे, लेकिन जो थे, उनका संचार बेहतर था, विशेष रूप से दादा-दादी के साथ।

स्क्रीन समय को सीमित करना बच्चों के लिए अच्छा है, लेकिन माता-पिता को भी अपने फ़ोन के इस्तेमाल को नियंत्रित करने और बच्चों के लिए समय निकालने की ज़रूरत है। यह विशेष रूप से परीक्षा अवधि के दौरान महत्त्वपूर्ण है। चर्चा के दौरान बच्चों ने अपने माता-पिता से जुड़ी कई समस्याओं का उल्लेख किया। किसी बच्चे को पूरी तरह नज़रअंदाज़ करना लंबे समय में उसके भावनात्मक, सामाजिक और बौद्धिक कौशल को प्रभावित कर सकता है। बच्चों को लग सकता है कि वे महत्त्वपूर्ण नहीं हैं या उनसे कोई प्यार नहीं करता, जिससे उनके आत्मसम्मान को ठेस पहुँच सकती है। नज़रअंदाज़ किए जाने से वे बेचैन और उदास भी हो सकते हैं। कुछ मामलों में, यह गंभीर अवसाद का कारण भी बन सकता है। बच्चे या तो खुद पर या उनकी देखभाल करने वाले लोगों पर गुस्सा कर सकते हैं, जो उनके आक्रामक व्यवहार के रूप में सामने आ सकता है। बच्चों को अच्छी दोस्ती बनाने में भी कठिनाई हो सकती है, क्योंकि वे संवाद करना या दूसरों के साथ घुलना-मिलना नहीं सीखते हैं। वे सामाजिक स्थितियों से बचने लगते हैं, जिससे उनका अकेलापन और बढ़ सकता है। कभी-कभी वे सिर्फ़ ध्यान आकर्षित करने के लिए कुछ कर सकते हैं, भले ही वह नकारात्मक ही क्यों न हो। बच्चों को पर्याप्त ध्यान न देना उनके मस्तिष्क के विकास और स्कूल में प्रदर्शन को भी नुकसान पहुँचा सकता है, क्योंकि वे सीखने के लिए

प्रेरित महसूस नहीं करते। संवाद न होने से उनके भाषा कौशल और समग्र सोचने की क्षमताओं पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है, क्योंकि वे महत्त्वपूर्ण सीखने के क्षणों से वंचित रह जाते हैं। असुरक्षित लगाव शैली के कारण वे वयस्क होने पर भी अपने रिश्ते निभाने में समस्याओं का सामना कर सकते हैं। यह भावनात्मक उपेक्षा भविष्य में मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं की संभावना को भी बढ़ा सकती है। संक्षेप में, एक बच्चे की अनदेखी करने से नकारात्मक भावनाएँ, सामाजिक संघर्ष, व्यवहारिक समस्याएँ हो सकती हैं।

देखभाल करने वालों के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि वे बच्चों पर ध्यान दें और उन्हें स्वस्थ रूप से बड़ा होने के लिए आवश्यक समर्थन और संवाद प्रदान करें। बच्चों के साथ संवाद करना और ज़रूरत पड़ने पर दयालु होना अनिवार्य है। उन्हें अधिक समय दें। उनकी पसंदीदा गतिविधियों में शामिल होकर उनके साथ संबंध मजबूत करें। बच्चे अपने माता-पिता का ध्यान और स्वीकृति चाहते हैं और समझदार माता-पिता इसका उपयोग उनके विकास में सहयोग देने के लिए करते हैं। अनुशासन का अर्थ सिखाना और सीखना है। अपने बच्चों को सही और ज़रूरी बातें समझाने के लिए उनसे इस तरह बात करें कि वे आपका सम्मान करें और आपकी बात समझें। इस महत्त्वपूर्ण पेरेंटिंग कौशल पर सुझाव पाने के लिए एडेल फ़ार्बर की किताब 'हाउ टू टॉक सो किड्स विल लिसन एंड हाउ टू लिसन सो किड्स विल टॉक' पढ़ें।

याद रखें, किसी भी प्रकार की सज़ा, जैसे मारना, शर्मिंदा करना, अलग-थलग करना, चिल्लाना या डाँटना उचित नहीं है। ये चीज़ें आपके बच्चे को भावनात्मक रूप से नुकसान पहुँचा सकती हैं। अच्छे माता-पिता अपने बच्चों को संवाद और तर्क की शक्ति सिखाते हैं, जिससे वे ज़िम्मेदार और दयालु व्यक्ति बनते हैं। बच्चों में सहनशीलता और आदर्शों के मूल्यों को स्थापित करना आवश्यक है। घर और स्कूल दोनों जगह खुले संवाद को प्रोत्साहित करें। समय-समय पर बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य का आकलन करना भी महत्त्वपूर्ण है। बच्चों को सही मार्गदर्शन देने वाला वातावरण बनाना आवश्यक है। यह ज़िम्मेदारी माता-पिता और शिक्षकों के साथ-साथ समाज पर भी है।

कवयित्री, स्वतंत्र पत्रकार एवं स्तंभकार
उब्बा भवन, आर्यनगर, हिसार, हरियाणा

बहुआयामी प्रतिभा के धनी: प्रदीप कुमार यादव

डॉ. ओमप्रकाश कादयान

शिक्षक को देश का निर्माता इसलिए कहते हैं, क्योंकि वह विद्यार्थियों को किताबी कोर्स ही नहीं करवाता बल्कि उनका मार्गदर्शन भी करता है। वह विद्यार्थियों को ऐसे संस्कार, विचार या भाव देता है जिससे विद्यार्थी आगे जाकर देश के विकास व समृद्धि में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकें। हमारे ही बीच में कुछ ऐसे शिक्षक भी हैं जो कोर्स करवाने के साथ-साथ विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करने में विश्वास रखते हुए विद्यार्थियों की प्रतिभा निखारने, उन्हें अपनी संस्कृति से परिचय करवाने का अवसर दे रहे हैं। ऐसे ही एक शिक्षक हैं राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बोड़िया कमालपुर (रेवाड़ी) में कार्यरत शिक्षक प्रदीप कुमार यादव। प्रदीप कुमार यादव जिला संगठन आयुक्त (स्काउट्स) का पद भी लम्बे समय से सँभाले हुए हैं। इसके साथ-साथ यूथ एंड इको क्लब, लिगल लिट्रेसी, गीता जयन्ती कार्यक्रम के जिला संयोजक का पद भी इनके पास है तथा इनमें ये बेहतर प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं। कई वर्ष तक कल्चरल फेस्ट का कार्य भी इन्होंने संतोषजनक ढ़ग से सँभाले रखा। इनके मार्गदर्शन में गीता जयन्ती व लिगल लिट्रेसी की प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने कई बार राज्य स्तर पर पुरस्कार जीते हैं।

खास बात ये है कि ये लम्बे अर्से से भारत स्काउट एंड गाइड से जुड़े रहे हैं तथा कई वर्षों से डीओसी का कार्यभार सँभाले हुए हैं। इनके मार्गदर्शन में जिले के हज़ारों बच्चे स्काउटिंग गतिविधियों में भाग ले रहे हैं। इन्होंने सदैव बच्चों को ये ही सिखाया कि स्काउटिंग सेवा के लिए होती है। स्काउटिंग पूरी दुनिया के लोगों को जोड़ने का काम करती है, ये जीव-जंतुओं व प्रकृति का संरक्षण में अपना योगदान देती है। आज कुछ देश अपनी-अपनी सीमाओं का विस्तार करने, अपना आधिपत्य जमाने, अपना रौब दिखाने व संहारक दुश्मनी निकालने के लिए एक-दूसरे पर विनाशकारी आक्रमण कर रहे हैं, ऐसे में स्काउटिंग संस्था का संदेश और भी प्रासंगिक हो जाता है।

प्रदीप यादव के मार्गदर्शन में जिले के बीते कुछ वर्षों में स्काउटिंग में करीब 250 स्काउट्स ने राज्य पुरस्कार कैंपों में हिस्सा लिया तथा 5 राष्ट्रपति स्काउट अवॉर्ड जीते। इनकी अपनी भी स्काउटिंग में सक्रिय भागीदारी रही है। बेहतर कार्य के लिए इन्हें मैडल ऑफ मैरिट तथा लोंग सर्विस डेकोरेशन अवार्ड भारत स्काउट एण्ड गाइड की तरफ से मिल चुके हैं। राज्य प्रशिक्षण आयुक्त स्काउट्स लक्ष्मी सिंह वर्मा ने प्रदीप की प्रशंसा करते हुए बताया कि प्रदीप यादव स्काउटिंग में 1992 से सक्रिय

भूमिका निभा रहे हैं। डीओसी का कार्यभार सँभालने के बाद जिला रेवाड़ी ने स्काउटिंग को नई पहचान दिलाई है। उनके मार्गदर्शन में बहुत से स्काउट्स को राष्ट्रपति अवॉर्ड से नवाज़ा गया है। जिले के बहुत से स्काउट-गाइड ने राष्ट्रीय जंबूरी में भाग लिया एवं जिले का नाम रोशन किया।

स्काउटिंग में लंबे अर्से से जुड़े हुए तथा हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग परियोजना परिषद के एसोसिएट कंसलटेंट डॉ. रामकुमार ने बताया कि प्रदीप कुमार यादव का एडवेंचर गतिविधियों, यूथ एंड इको क्लब व स्काउट एंड गाइड की गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के साथ-साथ महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। ऐसे कर्मठ व्यक्तियों की हर कहीं ज़रूरत होती है।

प्रदीप कुमार यादव सैकड़ों विद्यार्थियों की हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग की ओर से देशभर में आयोजित एडवेंचर टूरों में भागीदारी करवा चुके हैं तथा एडवेंचर कैम्प आयोजनों में भी सराहनीय भूमिका निभा चुके हैं। कल्चरल फस्ट में इनके जिले की कई टीमें राज्य स्तर पर विजेता बन चुकी हैं। भाखड़ा ब्यास प्रबन्धन बोर्ड नंगल-चण्डीगढ़ द्वारा हर वर्ष स्कूल, जिला, राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर स्कूली बच्चों के लिए, ऊर्जा संरक्षण पर आयोजित पेंटिंग प्रतियोगिता में जिला संयोजक होने के नाते ये अपने जिले के बच्चों की सराहनीय भागीदारी करवाते हैं, इसलिए ये बीबीएमबी द्वारा कई बार सम्मानित भी हो चुके हैं।

इन्होंने बताया कि शिक्षा विभाग में शिक्षक के रूप में सबसे पहले इन्होंने रेवाड़ी के गादला गाँव के सरकारी स्कूल में पदभार सम्भाला। उसके बाद इन्होंने समय-समय पर क्रमवार चांदनवास, नया टहणा, बीकानेर, मोहद्दीनपुर, करावरा मानकपुर, रोलियावास, प्राणपुरा (एबीआरसी) आदि स्थानों पर अपनी सेवाएँ दीं। फिर ये रेवाड़ी के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में रहे। वर्तमान में ये मॉडल संस्कृति राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बोड़िया कमालपुर में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। इसके साथ-साथ अन्य जिम्मेदारियाँ भी बखूबी निभा रहे हैं। झरनों, नदियों, पहाड़ों, जंगलों, पक्षियों से प्रेम करने वाले प्रदीप कुमार को पहाड़ों की यात्राओं में खास रुचि है। इन्हें प्रकृति का सान्निध्य अच्छा लगता है। गाँव मस्तापुर (रेवाड़ी) में माता संतरादेवी व पिता एनडीएसआई अमर सिंह यादव के घर 10 जून, 1968 को जन्मे प्रदीप कुमार का लक्ष्य है कि वे स्कूली बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ तन व मन से मज़बूत बनाएँ। विभिन्न गतिविधियों में भागीदारी करवाकर उनकी प्रतिभा में निखार लाएँ। उन्हें अनुभवी बनाकर जीवन का सही रास्ता दिखाएँ। यही कारण है कि अनेक बार बहुत से अधिकारी प्रदीप कुमार यादव के कार्यों व उनकी सेवा-भावना की सराहना कर चुके हैं।

सेवानिवृत्त शिक्षक
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

हिरल वर्मा : तलवारबाजी में दक्ष, काव्य सृजन में सशक्त

कुछ प्रतिभाएँ ईश्वर प्रदत्त होती हैं तथा कुछ अपनी रुचि अभिरुचि तथा अभ्यास से अर्जित की जाती हैं। ये दोनों ही प्रतिभाएँ एक साथ किसी में विद्यमान हों तो कहना ही क्या...! बहुमुखी प्रतिभा की धनी छात्रा हिरल वर्मा ऐसी ही दुर्लभ श्रेणी में आती हैं। एक ओर जहाँ उसने नवीं कक्षा तक पहुँचते-पहुँचते राष्ट्रीय स्तर पर लड़ाकू खेल तलवारबाजी में अनेक स्वर्ण पदक जीतकर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है, वहीं एक बाल कवयित्री के रूप में भी वह धीरे-धीरे अपनी मौलिक विशिष्ट पहचान बनाने लगी है। कोमल सूक्ष्म भावनाओं का मृदुल सृजन संसार तथा कठिन साधना का साहसिक खेल तलवारबाजी में परस्पर विरोधाभास झलकता है, फिर भी वे दोनों में पारंगत है, जिसका कारण इन्हें ईश्वर प्रदत्त काव्य प्रतिभा तथा अपनी कड़ी साधना से अर्जित असिक्रीड़ा यानी तलवारबाजी यानी फेंसिंग की महारत शामिल है।

5 जून, 2011 को रेवाड़ी में जन्मी मेधावी छात्रा हिरल फ़िलहाल रेवाड़ी के आरपीएस स्कूल में नवीं कक्षा की छात्रा है। नेवी से सेवानिवृत्त उनके पिता मनोज कुमार तथा बावल स्थित राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में गणित प्राध्यापिका के तौर पर सेवारत उनकी माता मीनाक्षी बताते हैं कि हिरल बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि की धनी रही हैं तथा खेलों के प्रति विशेष रुचि रही है। फेंसिंग में इन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर कई बार प्रेरक प्रतिनिधित्व किया है, जिसमें इनके गुरुजन तथा कोच राजपाल यादव के विशेष योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

तलवारबाजी की इस यात्रा में वर्ष 2019 में नासिक (महाराष्ट्र) में आयोजित अंडर-10 नेशनल प्रतियोगिता में उसने व्यक्तिगत गोल्ड के साथ अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया था। वर्ष 2020 में अंडर-14 में कटक (उड़ीसा) में अपनी टीम को गोल्ड दिलवाने, वर्ष 2021 में रायपुर (छत्तीसगढ़) में अंडर-14 में अपनी टीम को ब्रोंज दिलवाने में उसकी केंद्रीय भूमिका रही। इसी प्रकार वर्ष 2022 में अंडर-12 में राष्ट्रीय स्तर पर अपनी टीम को स्वर्ण पदक दिलवाना, अंडर-14 में कोच्ची (केरल) में टीम को गोल्ड तथा व्यक्तिगत ब्रोंज जीतकर दबदबा बनाए रखने में हिरल की निरंतरता को देखा जा सकता है। वर्ष 2023 में अंडर-14 में व्यक्तिगत तथा टीम दोनों में गोल्ड तथा अंडर-14 में आंध्रप्रदेश में आयोजित राष्ट्रीय प्रतियोगिता में अपनी टीम को स्वर्ण पदक तथा व्यक्तिगत ब्रोंज मेडल लेकर उसने फेंसिंग में नया अध्याय रचा है।

हिरल की इस खेल प्रतिभा के अलावा काव्य प्रतिभा भी बेजोड़ है। उम्र के इस नन्हे पड़ाव पर उनकी कविताओं में परिपक्वता एवं गंभीरता उन्हें भीड़ से अलग करती है। उनकी छंद मुक्त कविताओं में बेहद सूक्ष्म मार्मिक संवेदनाओं को महसूस किया जा सकता है। इतनी कम उम्र में ऐसी परिपक्व रचनाधर्मिता के चलते उन्हें संभावनाओं की कवयित्री कहा जा सकता है। तलवारबाजी के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं में कई कई दिनों तक दूरदराज तक प्रतिभागिता के लिए जाने से पढ़ाई पर प्रतिकूल प्रभाव को देखते हुए फिलहाल हिरल की तलवारबाजी भले ही लगभग छुड़वा दी गई है, किंतु उनकी खेल-भावना को हर क्षेत्र में देखा जा सकता है। अभी तक हिरल ने अपनी सभी कक्षाएँ उत्कृष्टता के साथ उत्तीर्ण की हैं। वर्ष में दो-तीन बार एक -एक पखवाड़े तक खेल प्रतियोगिताओं में बाहर रहने के बावजूद वह कभी किसी कक्षा में दूसरे स्थान पर नहीं आई। बहुमुखी प्रतिभा की धनी इस मेधावी छात्रा, होनहार खिलाड़ी तथा उभरती कवयित्री से शिक्षा, खेल तथा साहित्य के क्षेत्र को बड़ी आशाएँ हैं।

सत्यवीर नाहड़िया
प्राचार्य,रावमावि सीहा
रेवाड़ी, हरियाणा

'बाल सारथी' आपका अपना पन्ना है। हम चाहते हैं कि इसमें आपकी रचनाओं को स्थान दिया जाए। आपने कोई मौलिक कविता, कहानी या अन्य विधा की रचना लिखी हो तो अपने अध्यापक की सहायता से हमें ई-मेल या डाक द्वारा भेजें। आपकी रचनाओं को प्रकाशित करके हमें प्रसन्नता मिलेगी।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

- आपकी यामिका दीदी

सामान्य ज्ञान

- प्रश्न-1. भारत की सबसे पवित्र नदी किसे माना जाता है?
- उत्तर- गंगा को
- प्रश्न-2. मुस्लिम धर्म में किस अंक को शुभ माना जाता है?
- उत्तर- 786
- प्रश्न- 3. विश्व में सबसे बड़ा महाद्वीप कौन सा है?
- उत्तर- एशिया
- प्रश्न- 4. भारत के किस राज्य में सबसे पहले सूरज उगता है?
- उत्तरः अरुणाचल प्रदेश में
- प्रश्न- 5. भारत का सबसे ऊँचा पर्वत कौन सा है?
- उत्तरः कंचनजंगा
- प्रश्न- 6. भारत का सबसे बड़ा रेगिस्तान कौन सा है?
- उत्तरः थार
- प्रश्न- 7. भारत का सबसे बड़ा राज्य कौन सा है (जनसंख्या के अनुसार)?
- उत्तरः उत्तर प्रदेश
- प्रश्न- 8.भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा कौन सी है?
- उत्तरः हिंदी
- प्रश्न- 9. भारत का सबसे बड़ा बाँध कौन सा है?
- उत्तरः टिहरी बाँध
- प्रश्न- 10. भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री कौन हैं?
- उत्तरः श्री नरेंद्र मोदी

गिनती कविता

सबसे पहले आए एक
सेब खाने के फायदे अनेक

एक के बाद आए दो
पहले हाथ फिर मुँह धो,

दो के बाद आए तीन
कूड़ा डालो डस्टबीन

तीन के बाद आए चार
स्कूल जाओ होकर तैयार

चार के बाद आए पाँच
डॉक्टर करे आँखों की जाँच

पाँच के बाद आए छह
किसी को बुरा मत कह

छह के बाद आए सात
नाखून अपने रखो साफ

सात के बाद आए आठ
याद करो अपना पाठ।

आठ के बाद आए नौ
रात को तुम जल्दी सो।

नौ के बाद आए दस
बच्चो सभी पड़ो हँस।

गुरदीप उरलाना
प्राथमिक शिक्षक
राजकीय प्राथमिक पाठशाला ताराँवाली
ज़िला- कैथल, हरियाणा

बाल पहेलियाँ

1- भूतल पर जल धार बहाती,
दो अक्षर का मेरा नाम।
झील हिमनद झरने से निकलूँ,
नाम बताओ भोलूराम।।

2- यमुनोत्री है उद्भव मेरा,
तीन अक्षर का मेरा नाम।
गंगा की हूँ नदी सहायक,
नाम बताओ भोलूराम।।

3- उत्तर भारत में बहने वाली,
तीन अक्षर का मेरा नाम।
लखनऊ बसा है मेरे तट पर,
नाम बताओ गोलूराम।।

4- मध्य हटे तो कारी हूँ मैं,
प्रथम हटे तो बनती वेरी।
झटपट मेरा नाम बताओ,
बच्चो क्यों करते हो देरी।।

5- त्र्यंबक है उद्भव मेरा,
पावन मेरा तट।
चार अक्षर का नाम हमारा,
बोलो तो झटपट।।

6- दक्षिण से उत्तर में बहती,
चार अक्षर का मेरा नाम।
सिहावा पर्वत उद्भव मेरा,
नाम बताओ गोलूराम।।

7- उत्तर भारत में बहने वाली,
चार अक्षर का मेरा नाम।
हर मौसम में बहती हूँ मैं,
नाम बताओ भोलूराम।।

8- गंगोत्री है उद्भव मेरा,
दो अक्षर का मेरा नाम।
राष्ट्रीय नदी हूँ प्यारे बच्चो,
नाम बताओ मोहन-श्याम।।

9- कल-कल बहती हूँ मैं,
शीतल मेरी धारा।
बसा अयोध्या तट पर मेरे,
बोलो नाम हमारा।।

10- गोरखपुर एक शहर पुराना
बसा है मेरे तट पर।
शीतल शीतल जल है मेरा,
तुम आओ देखो छूकर।।

11- मध्य भारत की नदी कहें सब,
यमुना में मिल जाऊँ।
बसा है कोटा मेरे तट पर,
बोलो क्या कहलाऊँ?

12- कल कल बहती रहती,
एक नदी है पावन।
उज्जैन बसा है इसके तट पर,
कुंभ लगे मनभावन।।

उत्तर- 1-नदी, 2-यमुना नदी, 3-गोमती नदी,4-कावेरी नदी, 5-गोदावरी नदी, 6- महानदी, 7-सतलुज नदी, 8-गंगा नदी, 9-सरयू नदी, 10-राप्ती नदी, 11- चंबल नदी, 12. क्षिप्रा नदी।

डॉ. कमलेन्द्र कुमार(प्रअ)
रावगंज, कालपी
जिला जालौन, उत्तर प्रदेश- 285204

गधा और गीदड़

एक धोबी का गधा था। वह दिन भर कपड़ों के गट्ठर इधर से उधर ढोने में लगा रहता। धोबी स्वयं कंजूस और निर्दयी था। अपने गधे के लिए चारे का प्रबंध नहीं करता था। शरीर से गधा बहुत दुर्बल हो गया था।

एक रात उस गधे की मुलाकात एक गीदड़ से हुई। गीदड़ ने उससे पूछा कहिए महाशय, आप इतने कमज़ोर क्यों हैं?

गधे ने दुखी स्वर में बताया कि कैसे उसे दिन भर काम करना पड़ता है। खाने को कुछ नहीं दिया जाता। गीदड़ बोला तो समझो अब आपकी भुखमरी के दिन गए। यहाँ पास में ही तरह-तरह की सब्जियाँ उगी हुई हैं। मैंने बाग की तार तोड़कर एक जगह अंदर घुसने का गुप्त मार्ग बना रखा है। बस वहाँ से हर रात अंदर घुसकर छककर खाता हूँ और सेहत बना रहा हूँ। तुम भी मेरे साथ आया करो। लार टपकाता गधा गीदड़ के साथ हो गया।

बाग में घुसकर गधे ने महीनों के बाद पहली बार भरपेट खाना खाया। दोनों रात भर बाग में ही रहे और पौ फटने से पहले गीदड़ जंगल की ओर चला गया और गधा अपने धोबी के पास आ गया।

उसके बाद वे रोज़ रात को एक जगह मिलते। बाग में घुसते और जी भरकर खाते। धीरे-धीरे गधे का शरीर भरने लगा। उसके बालों में चमक आने लगी और चाल में मस्ती आ गई। वह भुखमरी के दिन बिल्कुल भूल गया। एक रात खूब खाने के बाद गधे की तबीयत अच्छी तरह हरी हो गई। वह झूमने लगा और अपना मुँह ऊपर उठाकर कान फड़फड़ाने लगा। गीदड़ ने चिंतित होकर पूछा मित्र, यह क्या कर रहे हो? तुम्हारी तबीयत तो ठीक हैं?

गधा आँखें बंद करके मस्त स्वर में बोला मेरा दिल गाने का कर रहा हैं। अच्छा भोजन करने के बाद गाना चाहिए। सोच रहा हूँ कि ढैंचू राग गाऊँ।

गीदड़ ने तुरंत चेतावनी दी- न-न, ऐसा न करना गधे भाई। गाने-वाने का चक्कर मत चलाओ। यह मत भूलो कि हम दोनों यहाँ चोरी कर रहे हैं। मुसीबत को न्यौता मत दो। बाग के चौकीदार जाग जाएँगे।

गधा हँसा- अरे मूर्ख गीदड़! मेरा राग सुनकर बाग़ के चौकीदार तो क्या, बाग का मालिक भी फूलों का हार लेकर आएगा और मेरे गले में डालेगा।

गीदड़ ने चतुराई से काम लिया और हाथ जोड़कर बोला गधे भाई, मुझे अपनी ग़लती का अहसास हो गया हैं। तुम महान गायक हो। मैं मूर्ख गीदड़ भी तुम्हारे गले में डालने के लिए फूलों की माला लाना चाहता हूँ।

गधे ने गर्व से सहमति में सिर हिलाया। गीदड़ वहाँ से सीधा जंगल की ओर भाग गया। गधे ने उसके जाने के कुछ समय बाद मस्त होकर रेंकना शुरू किया। उसके रेंकने की आवाज़ सुनते ही बाग के चौकीदार जाग गए और उसी ओर लट्ठ लेकर दौड़े। सारे चौकीदार डंडों के साथ गधे पर पिल पड़े। कुछ ही देर में गधा पिट-पिटकर अधमरा हो गया।

पंचतंत्र से

मोर

ारा - प्यारा पक्षी मोर
र पर कलगी नीली-नीली
बी गर्दन नीली-नीली
रिश आए मचाए शोर
तना सुंदर पक्षी मोर

नमोहक ये नाच दिखाता
बका ये मन बहलाता
ड़े प्यार से अपनी गर्दन
धर-उधर मटकाता मोर

उमड़-घुमड़ कर बादल आए
मोर ने अपने पंख फैलाए
पंख फैलाकर नाचे मोर
कितना सुंदर पक्षी मोर

रामफल 'कण्व'
प्राथमिक शिक्षक
राजकीय प्राथमिक पाठशाला
प्यौदा, ज़िला कैथल, हरियाणा

ट्रैफिक नियम

आओ बच्चो तुम्हें
बताएँ, नियम कुछ
अनजान रे।
पैदल हो या चले गाड़ी
में, ट्रैफिक नियमों का
रखो ध्यान रे।।

पहला नियम हमें
बताता, बाईं तरफ
चलना सिखलाता।
सचेत होकर चलना
तब, जब इधर-उधर से
वाहन कोई आता।।
दोनों तरफ देख कर चलना मंज़िल हो जाएगी
आसान रे
पैदल हो या चले .....

दूसरा नियम हमें बताता,
ज़ेबरा क्रॉसिंग से सड़क पार करवाना।
रुक जाए जब वाहनों की कतार,
ट्रैफिक नियमों को दोहराना।।
सड़क पार करते समय फोन से हटा लो ध्यान रे।
पैदल हो या चले गाड़ी.....

तीसरा नियम हमें बताता,
लाल बत्ती पर रुक जाना।
पीली बत्ती हो जाए तब,
चलने के लिए तैयार हो जाना।।
हरी बत्ती हो जाए तब,
स्टार्ट करो अपना वाहन रे।
पैदल हो या चले गाड़ी.....

एक चीज तुम सीखो बच्चो,
बड़े-बुज़ुर्गों को सीट देना।
सड़क पर खेलकूद मत करना,
अच्छी-अच्छी सीख लेना।।
ये ट्रैफिक नियम हैं 'ऋतुराज',
न है कोई बयान रे।
पैदल हो या चले गाड़ी में....

ऋतुराज
प्राथमिक अध्यापक
राजकीय प्राथमिक पाठशाला रामनगर
ज़िला-कैथल, हरियाणा

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

आदरणीय अध्यापक साथियो व उत्साही विद्यार्थियो! खेल-खेल में विज्ञान शृंखला के अंतर्गत कुछ नई व रुचिकर विज्ञान गतिविधियाँ आपके समक्ष प्रस्तुत हैं-

1. कंपित झिल्ली वाला बाजा बनाया और बजाया-

ध्वनि, एक प्रकार का कंपन या विक्षोभ है जो किसी ठोस, द्रव या गैस से होकर संचारित होती है। किन्तु मुख्य रूप से उन कंपनों को ही ध्वनि कहते हैं जो मानव के

कान से सुनायी पडती हैं। दीक्षा ऐप, एससीईआरटी स्टेम मंच द्वारा सुझाई गई गतिविधि वाइब्रेटिंग मेंबरेन से विद्यार्थियों ने गुब्बारे, पीवीसी पाइप व रबरबैंड की मदद से एक बाजा बनाया। एक इंच व्यास व छह इंच लंबे पीवीसी पाइप के एक सिरे पर गुब्बारे के दूसरे बंद भाग को काट कर बने सुराख में फँसाकर रबरबैंड से टाइट कर देते हैं। गुब्बारे के दूसरे खुले भाग पर पेन का खोल या लेवलिंग पाइप का दो इंच का टुकड़ा फँसा देते हैं। इस प्रकार यह बाजा तैयार हो जाता है। दो इंच वाले पाइप के टुकड़े को मुँह से पकड़ कर छह इंच वाले पाइप के टुकड़े को खींचते हैं जिससे गुब्बारे में खिंचाव के कारण एक तनित झिल्ली बन जाती है। अब छोटे पाइप से फूँकने पर झिल्ली में कंपन उत्पन्न होता है जिससे बड़े पाइप के खुले सिरे से बड़ी मधुर ध्वनि सुनाई देती है। इस ध्वनि को हम झिल्ली के तनाव को कम ज्यादा करके इंस्ट्रूमेंट की आवृत्ति को भी बढ़ा व घटा भी सकते हैं, जिससे उत्पन्न होती ध्वनि में परिवर्तन आता है।

2. कंपन करती झिल्ली के कंपनों को देखना-

विद्यार्थियों ने यह इच्छा जताई कि हम यह देखना चाहते हैं कि तनित झिल्ली में

कंपन उत्पन्न होता भी है या नहीं? इसके लिए सर्वप्रथम उन्हें झिल्ली का स्पर्श करवाया गया। फलस्वरूप वे मान तो गए परंतु पूरी तरह से संतुष्ट नहीं दिखाई दिये। इसके लिए सिलाई मशीन वाला धागा लिया। उसमें एक थर्मोकोल की बीड़ (थर्मोकोल बॉल) पिरोई गई। धागे से जुड़ी थर्मोकोल की बीड़ को कंपित तनित झिल्ली पर स्पर्श कराया गया तो वह कूदने लगी। इसके सत्यापन के लिए एक और तरीका यह अपनाया गया कि तनित झिल्ली पर नमक डालकर दिखाया तो नमक के कण भी उछलने लगे। अब सभी विद्यार्थी खुश थे कि तनित झिल्ली में फूँकने पर कंपन उत्पन्न होता है, परिणामस्वरूप ही ध्वनि उत्पन्न होती है।

3. धागे को खींचा तो पेपर कप चीखने लगा-

यह एक बहुत सरलता से तैयार हो जाने वाली गतिविधि है, जिसे हम एक पेपर या प्लास्टिक का कप, धागा, एक माचिस की तीली व पानी की मदद से करते हैं। इस गतिविधि से हम ध्वनि का कंपन द्वारा उत्पन्न होना, संचरण व आवर्धन होने को समझ सकते हैं। एक पेपर कप के नीचे सुराख करके उसमें धागा पिरोकर माचिस की तीली के साथ बाँध देते हैं। आप अपनी अँगूठे और साथ वाली उँगली से चुटकी बनाकर धागे को ऊपर से नीचे की तरफ रगड़ते हैं तो ध्वनि सुनाई देती है, लेकिन जैसे ही धागे व उँगलियों को पानी से गीला कर लेते हैं तो ध्वनि बहुत तेज उत्पन्न होती जाती है। गीली उँगलियों से गीले धागे को खींचने की गति तेज हो जाती है जिससे उत्पन्न होने वाले कंपन भी बढ़ जाते हैं। धागे और उँगलियों के बीच रगड़ से जो कंपन उत्पन्न होता है। वह धागे से संचरित होकर कप की तली पर टकराता है। फलस्वरूप ध्वनि उत्पन्न होती हैं और कप उसके आवर्धन में मदद करता है। यहाँ यह प्रोजेक्ट मात्र एक प्रदर्शन है। इसे एक वास्तविक प्रयोग बनाने के लिए, आप इन सवालों के जवाब देने की कोशिश कर सकते हैं। किस तरह के धागे या धात्विक तार सबसे तेज़ आवाज़ निकालते हैं? कौन से धागे सबसे धीमी आवाज़ निकालते हैं? क्या कप का आकार ध्वनि को प्रभावित करता

है? पानी के स्थान पर खाद्य तेल, स्नेहक अन्य सामग्री का उपयोग करके देखें कि क्या इससे ध्वनि की मात्रा प्रभावित होती है?

4. स्ट्रॉ-गुब्बारे से बनाई पीपनी-

एक स्ट्रॉ के एक सिरे को अंग्रेज़ी के अक्षर वी जैसी शेप में काट लिया। उस सिरे को मुँह में ले जाकर दाँतों से हल्का दबाने के बाद फूँक मारने से पीपनी जैसी ध्वनि

सुनाई देती है, क्योंकि हवा फूँकने पर वी शेप वाले सिरे पर कंपन उत्पन्न होता है। एक विद्यार्थी ने सुझाया कि इसे मुँह से फूँकने की बजाय अगर हम इस वी शेप सिरे पर सेलो टेप की मदद से एक गुब्बारा लगते हैं और गुब्बारे में हवा भर कर निकलने दें तो भी क्या यह पीपनी बजेगी, यह करके देखते हैं। विद्यार्थी के सुझाए तरीके को करके देखा गया तो भी पीपनी बजी, जिसे सुन कर विद्यार्थी बहुत खुश हुए व इस नवाचार से उत्साहित भी हुए।

5. वर्षा जल संचयन संरचना की कार्यप्रणाली जानी-

अटल भूजल योजना के अंतर्गत संबंधित विभाग द्वारा विद्यालय में एक वर्षा जल

संचयन ढाँचा निर्मित किया गया है, जिसकी कार्य प्रणाली को समझने की विद्यार्थियों की बहुत दिनों से इच्छा थी। अटल भूजल योजना एक ऐसी क्षेत्रीय की योजना है, जिसका उद्देश्य सामुदायिक भागीदारी के साथ भूजल के सतत प्रबंधन को बढ़ावा देना है। इस योजना के तहत, पीएम श्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, दामला में जिला कार्यान्वयन प्राधिकरण द्वारा वर्षा जल संचयन संरचना का निर्माण किया गया था, जो अब पूरी तरह से चालू हालत में है। आज विद्यार्थियों की कई दिनों पुरानी जिज्ञासा का समाधान हो पाया। विद्यार्थियों को मौके पर ले जाकर इसकी पूरी कार्यप्रणाली को समझाया गया, जिससे धीरे-धीरे छात्रों के जल संरक्षण और वर्षा जल संचयन से संबंधित ज्ञान में वृद्धि हुई।

अच्छा तो आदरणीय अध्यापक साथियो! व प्रिय विद्यार्थियो आगामी अंक में फिर से मिलते हैं कुछ नई विज्ञान गतिविधियों के साथ।

साइंस मास्टर/ ईएसएचएम
पीएमश्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय दामला, खंड-जगाधरी
यमुनानगर, हरियाणा

मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला

'मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला' की पिछली कड़ियों में आपने घुलनशीलता और विलयन, गलन और जमाव, वाष्पीकरण और संघनन, अवमूल्यन (Sublimation), आकार व बनावट में परिवर्तन, मिश्रण की प्रक्रिया, उबालना और पकाना, फिल्टर करना व छलनी करना, घनत्व की परीक्षा, ठंडा और गर्म करना, मक्खन का जमना व पिघलना, क्रीम का मथना और मक्खन का बनना, चॉकलेट का पिघलना व जमना आदि भौतिक अभिक्रियाओं को पढ़ा, जिन्हें आप अपने घर में, अपनी रसोई में रोज़ाना देखते हैं।

प्रस्तुत कड़ी में हम कुछ अन्य भौतिक अभिक्रियाओं की चर्चा करेंगे, जिन्हें आप अपने घर की रसोई में देख व समझ सकते हैं। इन अभिक्रियाओं को बारीकी से देखा-समझा जाए तो ये विज्ञान के अनेक सिद्धांतों को समझाने में सहायक होती हैं। भौतिक अभिक्रियाओं में पदार्थ की स्थिति, आकार, रूप और ऊर्जा के रूप में परिवर्तन होता है, परंतु इनमें कोई नया पदार्थ नहीं बनता। रसोई में ऐसी कई भौतिक प्रक्रियाएँ होती हैं, जिनका निरीक्षण करके विद्यार्थी आसानी से विज्ञान के इन बुनियादी सिद्धांतों को समझ सकते हैं। नीचे कुछ अन्य भौतिक अभिक्रियाओं पर चर्चा की जा रही है, जिन्हें विद्यार्थी रसोई में देख सकते हैं और उनसे सीख सकते हैं-

1. चीनी का घोल बनाना और क्रिस्टलीकरण-

पानी में चीनी को घोलने पर एक समान घोल बनता है। इस घोल को वाष्पित करने पर चीनी पुनः क्रिस्टल के रूप में प्राप्त की जा सकती है। यह प्रक्रिया रासायनिक संरचना को बदले बिना चीनी की भौतिक अवस्था को परिवर्तित करती है। यह प्रक्रिया विलयन और क्रिस्टलीकरण के सिद्धांत पर आधारित है। पानी में चीनी के अणु घुलकर एक समान रूप से फैल जाते हैं, और वाष्पीकरण से यह घोल ठोस क्रिस्टल में बदल जाता है।

2. ब्रेड पर मक्खन लगाना-

ब्रेड पर मक्खन लगाना पदार्थ की सतह और बनावट में परिवर्तन करता है। यह प्रक्रिया केवल मक्खन और ब्रेड के बीच भौतिक संपर्क को दर्शाती है, जिसमें उनकी रासायनिक संरचना में कोई बदलाव नहीं होता। यह प्रक्रिया सतही तनाव और आसंजन के सिद्धांत पर आधारित है। मक्खन ब्रेड की सतह पर चिपकता है, जिससे उसका फैलाव और बनावट बदलती है।

3. सब्जियों को कुचलना और पीसना-

सब्जियों को कुचलने या पीसने पर उनका आकार और बनावट बदल जाता है। उदाहरण के लिए, टमाटर को कुचलने से उसका रस निकलता है। यह परिवर्तन पदार्थ की भौतिक अवस्था को बदलता है, लेकिन उसकी रासायनिक संरचना समान रहती है। यह यांत्रिक बल और द्रव्यमान संरक्षण के सिद्धांत पर आधारित है। बल के प्रयोग से पदार्थ का आकार बदला जा सकता है, लेकिन उसके रासायनिक गुण वही रहते हैं।

4. दाल या चावल धोना-

दाल या चावल को धोने पर उनकी सतह पर मौजूद धूल और अशुद्धियाँ अलग हो जाती हैं। यह प्रक्रिया केवल सतह से जुड़ी है और दाल या चावल की रासायनिक संरचना पर कोई प्रभाव नहीं डालती। यह प्रक्रिया गुरुत्वाकर्षण बल और फिल्ट्रेशन के सिद्धांत पर आधारित है। पानी की धार के कारण गंदगी अलग हो जाती है, लेकिन दाल और चावल का मूल स्वरूप वही रहता है।

5. बर्फ पर नमक डालना-

बर्फ पर नमक डालने से उसका गलनांक कम हो जाता है, जिससे वह तेजी से पिघलने लगता है। यह प्रक्रिया बर्फ और नमक के अणुओं के बीच की परस्पर क्रिया को दर्शाती है। यह गलनांक अवनमन के सिद्धांत पर आधारित है। नमक बर्फ के गलनांक को कम करता है, जिससे वह सामान्य तापमान पर भी जल्दी पिघलने लगती है।

6. काँच का टूटना-

जब काँच का गिलास गिरकर टूटता है, तो उसका आकार और रूप बदल जाता है। यह एक स्थायी भौतिक परिवर्तन है, जिसमें काँच के छोटे टुकड़े बन जाते हैं। यह बल और द्रव्यमान के संरक्षण के सिद्धांत पर आधारित है। बाहरी बल काँच की संरचना को तोड़ता है, लेकिन उसकी रासायनिक संरचना समान रहती है।

इन भौतिक परिवर्तनों से यह स्पष्ट होता है कि रसोई भी विज्ञान की प्रयोगशाला के रूप में कार्य कर सकती है। प्रत्येक प्रक्रिया विद्यार्थियों को विज्ञान के मूल सिद्धांतों को व्यावहारिक रूप से समझने का अवसर देती है।

साभारः चैट जीपीटी

सुखी कौन ?

जंगल में एक कौआ रहता था जो अपने जीवन से पूर्णतया संतुष्ट था। लेकिन एक दिन उसने बत्तख देखी और सोचा कि यह बत्तख कितनी सफ़ेद है और मैं कितना काला हूँ। यह बत्तख तो संसार की सबसे ज्यादा खुश पक्षी होगी। उसने अपने विचार बत्तख को बतलाए।

बत्तख ने उत्तर दिया- दरअसल मुझे भी ऐसा ही लगता था कि मैं सबसे अधिक खुश पक्षी हूँ, जब तक मैंने दो रंगों वाले तोते को नहीं देखा था। अब मेरा ऐसा मानना है कि तोता सृष्टि का सबसे अधिक खुश पक्षी है।

फिर कौआ तोते के पास गया। तोते ने उसे बताया कि मोर से मिलने से पहले तक वह भी एक काफी खुशहाल ज़िंदगी जीता था, परन्तु मोर को देखने के बाद उसने जाना कि उसमें तो केवल दो रंग हैं जबकि मोर में विविध रंग हैं।

तोते को मिलने के बाद वह कौआ चिड़ियाघर में मोर से मिलने गया। वहाँ उसने देखा कि उस मोर को देखने के लिए हज़ारों लोग एकत्रित थे। सब लोगों के चले जाने के बाद कौआ मोर के पास गया और बोला- प्रिय मोर! तुम तो बहुत ही खूबसूरत हो। तुम्हें देखने प्रतिदिन हज़ारों लोग आते हैं। पर जब लोग मुझे देखते हैं तो तुरन्त ही मुझे भगा देते हैं। मेरे अनुमान से तुम धरती पर सबसे अधिक सुखी पक्षी हो।

मोर ने जवाब दिया- मैं हमेशा सोचता था कि मैं धरती का सबसे खूबसूरत और खुश पक्षी हूँ। परन्तु अपनी इस सुंदरता के कारण ही मैं इस चिड़ियाघर में फँसा हुआ हूँ। मैंने चिड़ियाघर का बहुत ध्यान से निरीक्षण किया है और तब मुझे यह अहसास हुआ कि यहाँ के पिंजरों में केवल कौए को ही नहीं रखा गया है। इसलिए पिछले कुछ दिनों से मैं इस सोच में हूँ कि अगर मैं कौआ होता तो मैं भी खुशी से हर जगह घूम सकता था।

प्रिय पाठको! यह कहानी इस संसार में हमारी परेशानियों का सार प्रस्तुत करती है। कौआ सोचता है कि बत्तख खुश है, बत्तख को लगता है कि तोता खुश है, तोता सोचता है कि मोर खुश है जबकि मोर को लगता है कि कौआ सबसे खुश है। अतः दूसरों से तुलना हमें सदा दुखी करती है। हमारे पास जो है उसके लिए हमें सदा ईश्वर का आभारी रहना चाहिए। खुशी हमारे मन में होती है। हमें जो दिया गया है उसका हमें सर्वोत्तम उपयोग करना चाहिए। जब हम जीवन के इस तथ्य को समझ लेंगें तो सदा प्रसन्न रहेंगे।

-शिक्षा सारथी डेस्क

2025

मार्च माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

3मार्च- विश्व वन्य जीवन दिवस
4मार्च- राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस
12 मार्च- संत लाडू नाथ जयंती
14 मार्च- होली
15 मार्च- हसन खाँ मेवाती शहीदी दिवस
20 मार्च- विश्व गौरैया दिवस
21 मार्च- विश्वकाव्य दिवस
22 मार्च- विश्व जल दिवस
23 मार्च- भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव शहीदी दिवस
27 मार्च- विश्व रंगमंच दिवस
31 मार्च- ईद-उल- फितर

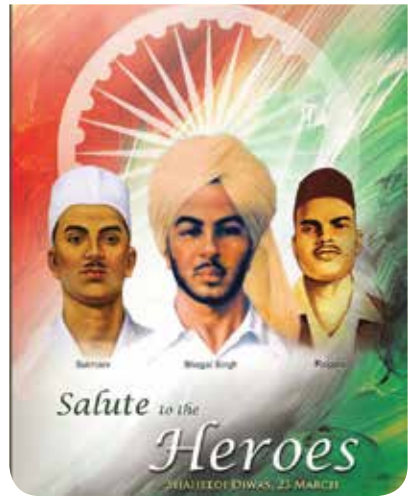

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत् से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

The Significance of Maha Shivratri

Maha Shivratri, which translates to "The Great Night of Shiva," is a sacred Hindu festival celebrated annually in honor of Lord Shiva, one of the principal deities in Hinduism. Observed on the 13th night/14th day of the waning moon phase in the month of Magha, this festival is a celebration of Shiva's cosmic dance, his marriage to Goddess Parvati, and the triumph of good over evil.

Significance and Mythology

According to Hindu mythology, Maha Shivratri is associated with several legends. One of the most popular stories is about the marriage of Shiva and Parvati. It is said that Parvati, the daughter of the Himalayas, was deeply in love with Shiva and wanted to marry him. However, Shiva was in a state of deep meditation and was not interested in worldly affairs. Parvati's devotion and determination eventually won Shiva's heart, and they got married on the night of Maha Shivratri.

Another mythological story associated with Maha Shivratri is about the cosmic dance of Shiva, known as the "Tandava." According to legend, Shiva's dance represents the cycle of creation, preservation, and destruction. The dance is said to have been performed by Shiva on the night of Maha Shivratri, and it is believed to have the power to destroy evil and bring peace and prosperity to humanity.

Rituals and Practices

Maha Shivratri is celebrated with great fervor and devotion across India and other parts of the world. The festival is marked by various rituals and practices, including:

1. **Fasting:** Devotees observe a strict fast on the day of Maha Shivratri, abstaining from food and water. Some devotees also observe a partial fast, eating only fruits and vegetables.
2. **Puja:** Special pujas (worship services) are performed in Shiva temples across the country. Devotees offer flowers, fruits, and other offerings to the deity.
3. **Abhishekam:** A special ritual called "Abhishekam" is performed, where the Shiva lingam (a symbol of Shiva) is bathed with milk, water, and other liquids.
4. **Jagran:** Devotees stay awake throughout the night, singing devotional songs and chanting mantras.
5. **Darshan:** Devotees visit Shiva temples to seek the blessings of the deity.

Symbolism and Spiritual Significance

Maha Shivratri is a festival that is rich in symbolism and spiritual

significance. Some of the key symbols and their meanings are:

1. **Shiva Lingam:** The Shiva lingam represents the cosmic axis, the center of the universe, and the source of all creation.
2. **The Night:** The night represents the unknown, the unconscious, and the infinite.
3. **The Moon:** The moon represents the cyclical nature of life, death, and rebirth.
4. **The Fasting:** Fasting represents the renunciation of worldly desires and the pursuit of spiritual growth.
5. **The Puja:** Puja represents the offering of oneself to the divine, the surrender of the ego, and the cultivation of devotion.

Celebrations Across India

Maha Shivratri is celebrated with great enthusiasm and fervor across India. Some of the most notable celebrations take place in:

1. **Ujjain:** The Mahakaleshwar Temple in Ujjain, Madhya Pradesh, is one of the most sacred Shiva temples in India.
2. **Varanasi:** The Kashi Vishwanath Temple in Varanasi, Uttar Pradesh, is another sacred Shiva temple that attracts millions of devotees on Maha Shivratri.
3. **Somnath:** The Somnath Temple in Gujarat is a sacred Shiva temple that is believed to be one of the 12 Jyotirlingas (self-manifested Shiva lingams) in India.

Conclusion

Maha Shivratri is a sacred Hindu festival that celebrates the cosmic dance of Shiva, the triumph of good over evil, and the pursuit of spiritual growth. The festival is marked by various rituals and practices, including fasting, puja, and darshan. The symbolism and spiritual significance of the festival are rich and profound, representing the cyclical nature of life, death, and rebirth, and the pursuit of spiritual growth and self-realization.

Spring Season

Spring is one of the four seasons, typically beginning around March 20th in the Northern Hemisphere and September 22nd in the Southern Hemisphere. It is a time of renewal and rebirth, marked by the awakening of plants and animals from their winter slumber.

The Science of Spring

Spring is caused by the tilt of the Earth's axis as it orbits the sun. As the Earth rotates, different parts of the planet receive varying amounts of sunlight throughout the year. During the spring season, the Northern Hemisphere begins to tilt towards the sun, resulting in longer days and warmer temperatures.

The Signs of Spring

As spring approaches, several signs indicate the changing of the seasons. Some of the most notable signs of spring include:

1. **Blooming Flowers:** One of the most iconic signs of spring is the blooming of flowers. Crocuses, daffodils, and tulips are among the first flowers to bloom, often pushing their way through the remaining snow and ice.
2. **Warmer Temperatures:** As the days grow longer, temperatures begin to rise, and the cold winter air starts to dissipate.
3. **Increased Daylight:** With the Earth's tilt changing, the days grow longer, and the sun appears higher in the sky.
4. **Birdsong:** As the weather warms, birds return from their winter migrations, filling the air with their sweet songs.
5. **Greenery:** As the snow melts and the ground thaws, plants begin to grow, and the once-barren landscapes transform into lush, green environments.

The Impact of Spring on Nature

Spring has a profound impact on the natural world. As the weather warms and the days grow longer, plants and animals alike begin to stir from their winter dormancy.

1. **Plant Growth:** With the increased sunlight and warmer temperatures, plants begin to grow, and new life bursts forth from the earth.
2. **Animal Migration:** Many animals migrate to warmer climates during the winter months. As spring approaches, these animals begin their journey back to their summer habitats.
3. **Breeding and Birth:** Spring is a time of renewal, and many animals take advantage of the warmer weather to breed and give birth to their young.
4. **Insect Emergence:** As the weather warms, insects begin to emerge from their winter hiding places, providing a vital source of food for many animals.

The Cultural Significance of Spring

Spring has significant cultural and symbolic meaning in many societies. It is often associated with:

1. **Renewal and Rebirth:** Spring is a time of new beginnings, and many cultures celebrate the renewal of life and the cyclical nature of the seasons.
2. **Hope and Optimism:** After the cold and darkness of winter, spring brings a sense of hope and optimism, as the world awakens from its slumber.
3. **Fertility and Abundance:** Spring is often associated with fertility and abundance, as the earth comes alive with new growth and the promise of a bountiful harvest.

Celebrating Spring

Many cultures celebrate the arrival of spring with festivals and traditions. Some of the most notable spring celebrations include:

1. **Nowruz:** Celebrated in many Middle Eastern and Central Asian cultures, Nowruz marks the beginning of spring and the new year.
2. **Easter:** A significant holiday in many Christian cultures, Easter celebrates the resurrection of Jesus Christ and the renewal of life.
3. **Holi:** A vibrant and colorful festival celebrated in India and other parts of South Asia, Holi marks the beginning of spring and the triumph of good over evil.

Conclusion

Spring is a time of renewal and rebirth, marked by the awakening of plants and animals from their winter slumber. As the weather warms and the days grow longer, the natural world comes alive with new growth and the promise of a bountiful harvest. Whether celebrated through festivals and traditions or simply enjoyed through the beauty of nature, spring is a time of hope and optimism, reminding us of the cyclical nature of life and the ever-present possibility of new beginnings.

International Yoga Festival

The International Yoga Festival is a premier event that celebrates the ancient Indian practice of yoga, bringing together yogis, gurus, and wellness enthusiasts from around the world. Held annually in Rishikesh, India, the festival is a week-long celebration of yoga, music, and spirituality.

History of the Festival

The International Yoga Festival was first held in 1999, and since then, it has grown into one of the largest and most popular yoga festivals in the world. The festival is organized by the Parmarth Niketan Ashram, a renowned spiritual institution in Rishikesh, in collaboration with the Government of Uttarakhand.

Celebrating Yoga and Spirituality

The International Yoga Festival is a celebration of yoga in all its forms and traditions. The festival features a diverse range of yoga styles, including Hatha, Vinyasa, Ashtanga, Kundalini, and more. Participants can choose from a variety of classes, workshops, and lectures, led by some of the world's most renowned yoga gurus and instructors.

In addition to yoga, the festival also celebrates spirituality, music, and art. Participants can enjoy a range of cultural programs, including classical music and dance performances, spiritual discourses, and meditation sessions.

Highlights of the Festival

Some of the highlights of the International Yoga Festival include:

1. **Yoga Classes:** Participants can choose from a variety of yoga classes, led by experienced instructors from around the world.
2. **Workshops and Lectures:** The festival features a range of workshops and lectures on yoga, spirituality, and wellness.
3. **Cultural Programs:** Participants can enjoy a range of cultural programs, including classical music and dance performances, spiritual discourses, and meditation sessions.
4. **Yoga Competitions:** The festival features yoga competitions, where participants can showcase their skills and compete for prizes.
5. **Exhibition:** The festival features an exhibition of yoga-related products and services, including yoga mats, clothing, and accessories.

Benefits of Attending the Festival

Attending the International Yoga Festival can have a range of benefits,

including:

1. **Improved Physical Health:** Participating in yoga classes and workshops can help improve physical health and flexibility.
2. **Reduced Stress and Anxiety:** The festival's focus on spirituality and meditation can help reduce stress and anxiety.
3. **Increased Self-Awareness:** The festival's emphasis on self-awareness and personal growth can help participants develop a greater understanding of themselves.
4. **Networking Opportunities:** The festival provides a unique opportunity to meet and connect with like-minded individuals from around the world.
5. **Cultural Immersion:** The festival offers a unique opportunity to experience Indian culture and spirituality firsthand.

Preparing for the Festival

If you're planning to attend the International Yoga Festival, here are a few things to keep in mind:

1. **Register in Advance:** Registration for the festival typically opens several months in advance. Be sure to register early to secure your spot.
2. **Plan Your Travel:** Rishikesh is located in the foothills of the Himalayas, and the nearest airport is in Dehradun. Plan your travel accordingly, and be sure to book your accommodations in advance.
3. **Pack Accordingly:** The festival takes place in March, and the weather can be cool and sunny. Pack accordingly, and be sure to bring comfortable clothing and yoga gear.
4. **Respect Local Customs:** The festival takes place in a sacred spiritual site, and participants are expected to respect local customs and traditions.

Conclusion

The International Yoga Festival is a unique and unforgettable experience that celebrates the ancient Indian practice of yoga. Whether you're a seasoned yogi or just starting out, the festival offers a range of classes, workshops, and cultural programs that can help you deepen your practice and connect with like-minded individuals from around the world. So why not join the celebration and experience the transformative power of yoga for yourself?

World Wildlife Day

World Wildlife Day is celebrated annually on March 3rd to raise awareness about the importance of conserving wildlife and their habitats. The day was proclaimed by the United Nations General Assembly in 2013, and it is celebrated globally to promote the conservation of wildlife and to combat wildlife trafficking.

History of World Wildlife Day

The concept of World Wildlife Day was first introduced by Thailand, which proposed a resolution to the United Nations General Assembly to declare March 3rd as World Wildlife Day. The resolution was adopted on December 20, 2013, and since then, World Wildlife Day has been celebrated annually on March 3rd.

Importance of World Wildlife Day

World Wildlife Day is important for several reasons:

1. **Conservation of Wildlife:** The day raises awareness about the importance of conserving wildlife and their habitats. It highlights the need to protect endangered species and to preserve biodiversity.
2. **Combating Wildlife Trafficking:** World Wildlife Day also raises awareness about the issue of wildlife trafficking, which is a major threat to wildlife conservation. The day promotes efforts to combat wildlife trafficking and to protect wildlife from exploitation.
3. **Promoting Sustainable Development:** The day promotes sustainable development and the importance of living in harmony with nature. It highlights the need to balance human development with the need to protect the environment and conserve wildlife.

Threats to Wildlife

Despite the importance of conserving wildlife, many species are facing numerous threats, including:

1. **Habitat Loss and Fragmentation:** The destruction and degradation of habitats are major threats to wildlife conservation. The expansion of agriculture, urbanization, and infrastructure development have led to the loss and fragmentation of habitats, making it difficult for wildlife to survive.
2. **Wildlife Trafficking:** Wildlife trafficking is a major threat to wildlife conservation. Many species are hunted for their body parts, such as rhino horns, elephant tusks, and pangolin scales, which are in

high demand on the black market.

3. **Climate Change:** Climate change is also a major threat to wildlife conservation. Rising temperatures, changing precipitation patterns, and increased frequency of extreme weather events are altering ecosystems and making it difficult for wildlife to adapt.

Conservation Efforts

Despite the numerous threats to wildlife, there are many conservation efforts underway to protect wildlife and their habitats. Some of these efforts include:

1. **Protected Areas:** Establishing protected areas, such as national parks and wildlife sanctuaries, is an effective way to conserve wildlife and their habitats.
2. **Community-Based Conservation:** Community-based conservation involves working with local communities to conserve wildlife and their habitats. This approach recognizes the importance of involving local people in conservation efforts and provides them with benefits for conserving wildlife.
3. **Anti-Poaching Efforts:** Anti-poaching efforts, such as patrolling protected areas and monitoring wildlife populations, are critical for protecting wildlife from poaching and habitat destruction.

Conclusion

World Wildlife Day is an important day for raising awareness about the importance of conserving wildlife and their habitats. The day promotes efforts to combat wildlife trafficking, protect endangered species, and preserve biodiversity. Despite the numerous threats to wildlife, there are many conservation efforts underway to protect wildlife and their habitats. By working together, we can make a difference and ensure the long-term survival of wildlife on our planet.

How to Celebrate World Wildlife Day

There are many ways to celebrate World Wildlife Day, including:

1. **Spread Awareness:** Spread awareness about the importance of conserving wildlife and their habitats.
2. **Support Conservation Efforts:** Support conservation efforts by donating to reputable organizations or volunteering your time.
3. **Reduce Your Impact:** Reduce your impact on the environment by reducing your carbon footprint, using public transport, and recycling.
4. **Visit Protected Areas:** Visit protected areas, such as national parks and wildlife sanctuaries, to learn about wildlife conservation and support conservation efforts.

By celebrating World Wildlife Day, we can make a difference and ensure the long-term survival of wildlife on our planet.

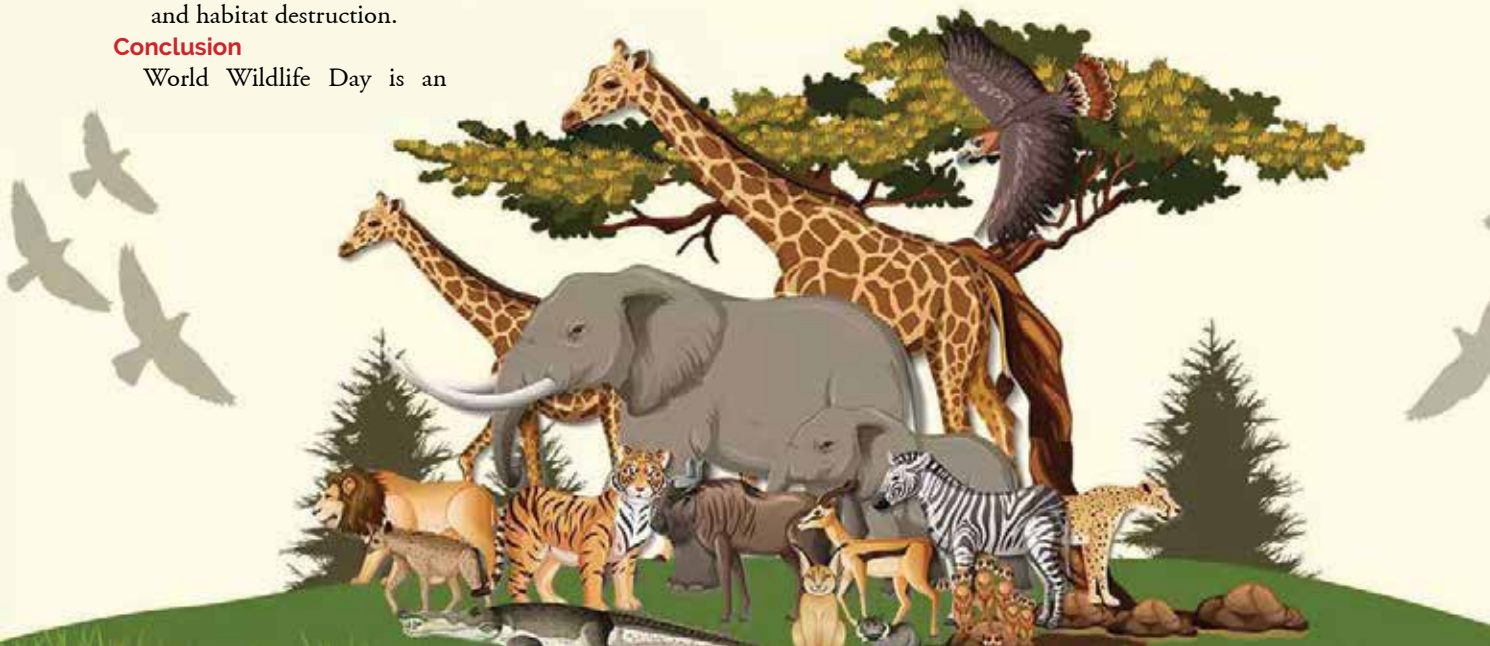

International Women's Day

International Women's Day (IWD) is celebrated annually on March 8th to commemorate the social, economic, cultural, and political achievements of women around the world. The day also serves as a call to action for accelerating women's equality and challenging biases and stereotypes that perpetuate gender inequality.

History of International Women's Day

The origins of International Women's Day date back to the early 20th century, when women's rights activists in the United States and Europe began organizing protests and rallies to demand equal rights and suffrage. In 1908, 15,000 women marched through New York City, demanding better pay, shorter working hours, and the right to vote.

In 1911, International Women's Day was celebrated for the first time in Austria, Denmark, Switzerland, and Germany, with women's rights activists organizing rallies and protests. The day gained international recognition in 1975, when the United Nations General Assembly adopted a resolution declaring March 8th as International Women's Day.

Theme of International Women's Day

Each year, International Women's Day has a specific theme that highlights a particular aspect of women's empowerment and equality. The theme for 2023 was "DigitALL: Innovation and technology for gender equality." The theme for 2024 is "Innovation for a gender-equal future."

Importance of International Women's Day

International Women's Day is important for several reasons:

1. **Celebrating Women's Achievements:** The day celebrates the social, economic, cultural, and political achievements of women around the world.
2. **Raising Awareness about Women's Rights:** The day raises awareness about women's rights and the challenges that women face in achieving equality.
3. **Promoting Women's Empowerment:** The day promotes women's empowerment and encourages women to take control of their lives and demand equal rights.
4. **Challenging Biases and Stereotypes:** The day challenges biases and stereotypes that perpetuate gender inequality and promotes a more inclusive and

equitable society.

Challenges Facing Women Today

Despite the progress made in achieving women's equality, women around the world continue to face numerous challenges, including:

1. **Gender-Based Violence:** Women and girls continue to experience high levels of gender-based violence, including domestic violence, rape, and harassment.
2. **Economic Inequality:** Women continue to earn lower wages than men and have limited access to education, training, and employment opportunities.
3. **Limited Access to Healthcare:** Women continue to have limited access to healthcare, particularly reproductive healthcare, and experience high rates of maternal mortality.
4. **Underrepresentation in Leadership:** Women continue to be underrepresented in leadership positions, including in politics, business, and education.

Ways to Celebrate International Women's Day

There are many ways to celebrate International Women's Day, including:

1. **Attend Events and Rallies:** Attend events and rallies organized by women's rights organizations and community groups.
2. **Support Women-Owned Businesses:** Support women-owned businesses and entrepreneurs by shopping at their stores or investing in their ventures.
3. **Volunteer for Women's Organizations:** Volunteer for women's organizations and community groups that work to empower women and promote gender equality.
4. **Raise Awareness on Social Media:** Raise awareness about women's rights and gender equality on social media using hashtags such as #IWD and #InternationalWomensDay.

Conclusion

International Women's Day is a celebration of women's achievements and a call to action for accelerating women's equality. The day raises awareness about women's rights and challenges biases and stereotypes that perpetuate gender inequality. By celebrating International Women's Day, we can promote women's empowerment and work towards a more inclusive and equitable society.

The Maha Kumbh Mela

The Maha Kumbh Mela is a sacred Hindu festival that takes place every 12 years in Prayagraj (formerly Allahabad), India. The festival is a celebration of the union of the three sacred rivers: the Ganges, the Yamuna, and the Saraswati.

History and Significance

The Maha Kumbh Mela has its roots in Hindu mythology, dating back to the time of the gods. According to legend, the gods and demons fought over the nectar of immortality, which was spilled on four different locations on earth, including Prayagraj. The Maha Kumbh Mela is celebrated at these locations, with Prayagraj being the most sacred.

Preparations for the Festival

The preparations for the Maha Kumbh Mela typically begin several years in advance. The Indian government and the state government of Uttar Pradesh work together to ensure a smooth and successful festival. Some of the key preparations include:

1. **Infrastructure Development:** The government invests heavily in infrastructure development, including the construction of new roads, bridges, and buildings.
2. **Sanitation and Hygiene:** The government focuses on sanitation and hygiene, with the installation of new toilets, showers, and drinking water facilities.
3. **Security:** The government takes steps to ensure the safety and security of devotees, including the deployment of additional police personnel and the installation of CCTV cameras.
4. **Accommodation:** The government provides accommodation facilities for devotees, including tents, dormitories, and guesthouses.

Highlights of the Festival

The Maha Kumbh Mela is a grand celebration of spirituality, culture, and community. Some of the highlights of the festival include:

1. **Shahi Snan:** The Shahi Snan is a grand procession of saints and sadhus, who take a dip in the sacred waters of the Ganges.
2. **Ganga Aarti:** The Ganga Aarti is a beautiful ceremony in which devotees offer prayers and worship to the Ganges.
3. **Cultural Programs:** The festival

features a range of cultural programs, including classical music and dance performances, spiritual discourses, and meditation sessions.

4. **Yoga and Wellness:** The festival features a range of yoga and wellness programs, including yoga classes, meditation sessions, and health check-ups.

Attendance and Participation

The Maha Kumbh Mela is attended by millions of devotees from around the world. The festival is a celebration of diversity and inclusivity, with people from all walks of life coming together to celebrate their shared spirituality and culture.

Economic Impact

The Maha Kumbh Mela has a significant economic impact on the local economy, generating revenue for local businesses and creating jobs for thousands of people. Some of the key economic impacts of the festival include:

1. **Tourism Revenue:** The festival generates significant revenue for the local tourism industry, with millions of devotees visiting the city.
2. **Job Creation:** The festival creates thousands of jobs for local people, including in the hospitality, transportation, and retail sectors.
3. **Infrastructure Development:** The festival leads to significant investment in infrastructure development, including the construction of new roads, bridges, and buildings.

Conclusion

The Maha Kumbh Mela is a sacred Hindu festival that celebrates the union of the three sacred rivers. The festival is a grand celebration of spirituality, culture, and community, attended by millions of devotees from around the world. This year it was held from January 14 to February 26 and was a grand success.

My Maha Kumbh Story

Dr. Deviyani Singh

"Adjust the leg rest so mom can put her feet up on the journey." My brother instructed as we started out in the appropriately selected KIA Carnival limousine for our Kumbh Mela visit.

We were going from Lucknow, by road to Prayagraj. It was my mother's wish that the family should get together at Maha Kumbh 2025. It was of special significance for us as 21 years ago my two brothers had immersed my father's ashes at the Sangam.

My younger brother who had recceed the area with great expertise drove us down from unknown village roads to avoid traffic jams. It had been a long time since I had travelled on single lane narrow and 'kutcha' village roads. It was pitch dark at times and 'Google Baba' did not work there. We had to ask villagers for directions and they were very helpful.

We passed numerous elaborate village wedding 'baraats' on the way which added to the delay. It was a moment of elation when we suddenly turned a blind corner and reached the Ganga. We crossed from the Kharauli Ganga bridge on the Teer ka Purva ghat. It was much further upstream than the crowded Phaphamau bridge.

We opened the twin sunroofs, stood up in the car and shouted, "Jai Ganga Maiya, Har, Har, Gange!" our voices startled the sleeping buffaloes.

We did not have to face the massive crowds there, but driving on the village road was a slow and tedious process. As we entered the city on a Sunday evening, the police had very efficiently put up barricades as the city was already full. They were directing every car to the massive, humongous, dusty, no man's land of 'Mela parkings', where lakhs of buses, taxis and private vehicles were parked. Some had spread blankets and were cooking and camping there. It looked like a base camp of people setting out on an expedition.

We managed to convince the cops to let us through the barricade. My mother being 86 years of age would have not been able to walk the 15 to 20 kms as some of the pilgrims were doing. We reached our accommodation late at night and knocked out. A four-hour journey took us nearly double the time.

We got up next morning and proceeded towards the Saraswati Ghat as my brother said it would be a better idea to go by boat, then try to approach the Sangam nose by land on foot. He had a strategy like moving into a war zone - the moment he saw a jam he would make a U-turn and take a lesser-known small road avoiding the scores of pilgrims walking in slow motion on

the Grand Trunk Road. This ensured, we kept moving and did not have to stand in a jam for more than 15 minutes in our entire trip. When we reached Saraswati ghat, I thought my mother would give up now, looking at the large number of steps we had to descend, but she had faith moving her forward. After a wait in the bright sun on the jetty, overlooking the New Yamuna bridge, we managed to procure a covered boat.

As soon as we sat in the boat, it was magical. I had never seen so many boats on the river and we proceeded towards the Triveni Sangam. There were flocks of beautiful migratory birds, the Siberian Seagulls dipping into the water and swimming right around us. We passed the majestic fort and reached the jetty after a 20-minute ride. We took a holy dip in a designated area overlooked by an army guard. I took 7 dips followed by another 7. I faced the sun and offered prayers and remembered my father as I submerged myself in the cold water, staying underneath for a while and letting it soak into my skin and hair. I could sense my father's presence there, maybe watching over us from another dimension and I did feel at peace even amongst the crowd.

There were nice spacious changing rooms on the jetty itself and after a quick dry, we sat back in the motor boat waiting for a few over enthusiastic passengers who still hadn't got enough of their dips. I think the administration has done a remarkable job in managing such unimaginable crowds.

On the way back we filled our water bottles where the current was swift, right at the Sangam. We saw a para motor buzzing in the sky over us, I couldn't help envy the wonderful view he would have had. Both sides of the banks were full. On the Yamuna side was a whole massive Tent city and the chanting of hymns faded into the

sunset as we sailed past. We rushed straight back to Lucknow on Monday evening by the normal route which surprisingly was clear as the weekend rush was over by then. We managed to get to Lucknow just in time for my elder brother to catch his train back to Delhi, despite a few diversions and jams.

Many friends wanted to know about my Kumbh experience and that's why I wrote this article. I was fortunate to have my brothers to guide us. It was not all smooth sailing, but a steady movement towards a single goal, and no one complained.

Every time I would ask such inane questions like.

"Will it be crowded? Will there be a jam?"

He would answer with infinite patience. "Well, it's Maha Kumbh. What do you expect?"

I felt the energy reverberating in the place when I boarded the boat. I felt a sense of awe, peace and calm. I was surrounded on both sides by banks crowded with people. I could not help being overwhelmed and moved by the spiritual energy that was concentrated there, which happened even before I took the dip. I just felt like is this what it will be like at the end-of-life? Will all these souls be waiting in long queues or lines at the edge of some other planet or realm to cross over? Would our past lives be judged or evaluated or would everyone get a free pass into the next one? Would we just end up in a great big void in the frozen corners of a yet unexplored universe of feeling nothing or maybe everything? So many souls piled up waiting for deliverance, dipping themselves into that vortex, the whirlpool of the mixing waters that would take them to another world and give them 'moksha'. I felt the same burst of spiritual energy one feels on entering a Holy place. I think just the mere presence of so many people having spiritual thoughts generates some kind of positive vibrations. That could perhaps be some sort of scientific explanation of what was happening there.

I saw a different India there. I saw people not pushing, shoving or jostling each other like on railway stations. They

were just walking calmly in a trance-like state. Their faces were flushed with the efforts of carrying their belongings and walking miles. Their foreheads smeared with yellow and red 'tilaks'. With just a single thought on their minds, they had to take the holy dip. They did not mind the hardships. They were moving with their baggage and cans of Ganga Jal balanced expertly on their heads. I couldn't help but admire the resilience and sturdiness of even the old people from distant villages, all moving steadily and surely towards one goal.

The Maha Kumbh, I believe, is a great leveller. There were no poor or rich, no VIPs, even if you did have some special arrangements of reaching or staying there, the roads and bridges were the same for everyone. Everyone had to move at the same pace. You can not hurry up if you go to Maha Kumbh. Please go knowing that it is a Yatra like an expedition that moves at its own pace. And you being in a hurry or being a VIP can't do anything about it. You will be one with the crowd. You will move with them at their pace, peacefully, steadily, calmly and determinedly to one goal and one goal only that is to take that holy dip. I saw people helping each other. It was a crowd but all determined to get one place and to help each other. I saw youths getting down and directing traffic. Not waiting for the poor harried singular cop on duty to come and clear the route. I saw the paan shop and tea shop owner all joining in to help everyone move smoothly towards their goal.

An old lady offered my mom her copper lota to bathe, saying

"Don't go deep in the water. Just sit here and take your 'snan'."

This was the kind of India I had not seen before, so many people, all thinking, good thoughts, coming with their family, elders or friends. If they felt they were going to get salvation or they were doing it just for posting selfies on Facebook or making Insta reels. All happy, just so happy to be there in that moment. Isn't that what meditation teaches us too? They were all just living there for the moment, in that realm, in that portal to another world. I feel people are going because of their own interests, calling or family obligations. No one is forcing anyone, therefore people not going should keep their opinions and questions respectfully to themselves and not mock those going. Is it crowded? Is the water dirty? It wasn't, at least from where I went, it was manageable and where I took a dip, the water seemed flowing. The rivers, the air, the ocean, our food, we have polluted the whole planet. I wish we would ask such questions on a daily basis and act upon them too. Not just when we have to dip ourselves in it.

My Maha Kumbh story was mine alone even in that crowd. I believe that there is no singular Maha Kumbh experience to use as a reference guide and every person has a different one. It all depends on your luck, circumstances and some planning, just like life. You have to go and experience it for yourself and those who could not go or didn't want to, well you would be coming back so go in your next life or for Ardh Kumbh if it calls you, or just find your peace within yourself. Live and let live. But if you do go, please be prepared to move with that massive sea of humanity. You cannot push or rush, you have to let it go, relax, go gently and with the flow, just like the river.

deviyanisingh@gmail.com

The Learning Journey

In halls of learning, we gather round,
With minds aflame, and hearts unbound.
The pursuit of knowledge, our noble quest,
To soak up wisdom, and be at our best.

The alarm clock rings, the day begins,
We rush to class, with weary grins.
The lecturers speak, with words of might,
We scribble notes, through morning light.

The campus buzzes, with energy high,
We laugh and chat, as we wander by.
The library beckons, with shelves so tall,
We delve into books, and give our all.

Exams loom near, with stress and fear,
We burn the midnight oil, and wipe away tears.
But still we persevere, through trials and strife,
For we know that knowledge, is the key to life.

In labs and studios, we experiment and play,
We discover new worlds, in our own way.
We form bonds strong, with friends so dear,
Together we journey, through laughter and tear.

Student life is a ride, with ups and downs,
But with each challenge, we wear our crowns.
For we are the future, the leaders of tomorrow,
And with each step forward, our dreams start to borrow.

So let us cherish, these student years,
And make the most, of laughter, tears, and cheers.
For in the end, it's not just about the grade,
But about the journey, and the knowledge we've made.

Sangeeta Kharbanda
PGT Computer Science
GSSS Ramgarh
Distt. Panchkula, Haryana

A Career in the Indian Police Force

A career in the Indian Police Force (IPF) is a challenging and rewarding profession that offers a unique opportunity to serve the nation and make a positive impact on society. The IPF is responsible for maintaining law and order, preventing and investigating crimes, and protecting the citizens of India.

Eligibility Criteria

To join the Indian Police Force, candidates must meet certain eligibility criteria, which vary depending on the rank and position. The basic eligibility criteria are:

1. **Age:** The minimum age limit is 21 years for Sub-Inspectors and above, and 20 years for Constables.
2. **Education:** The minimum educational qualification is a bachelor's degree for Sub-Inspectors and above, and a 10+2 pass certificate for Constables.
3. **Physical Fitness:** Candidates must be physically fit and meet the required physical standards, which include height, weight, and chest measurements.
4. **Citizenship:** Candidates must be citizens of India.

Selection Process

The selection process for the Indian Police Force involves several stages, including:

1. **Written Examination:** Candidates must pass a written examination, which tests their knowledge of general awareness, reasoning, and language skills.
2. **Physical Efficiency Test:** Candidates must pass a physical efficiency test, which assesses their physical fitness and endurance.
3. **Medical Examination:** Candidates must undergo a medical examination to ensure they are physically fit for the job.
4. **Interview:** Candidates who pass the written examination, physical efficiency test, and medical examination are called for an interview, which assesses their personality, communication skills, and suitability for the job.
5. **Training:** Once selected, candidates undergo training at a police academy, where they learn about law and order, investigation techniques, and other aspects of policing.

Ranks and Positions

The Indian Police Force has several ranks and positions, including:

1. **Constable:** The entry-level rank in the police force, responsible for

maintaining law and order, and assisting senior officers.

2. **Head Constable:** A senior constable who assists sub-inspectors and inspectors in their duties.
3. **Sub-Inspector:** A junior officer who is responsible for supervising constables and head constables, and investigating minor crimes.
4. **Inspector:** A senior officer who is responsible for supervising sub-inspectors and constables, and investigating serious crimes.
5. **Deputy Superintendent of Police (DSP):** A senior officer who is responsible for supervising inspectors and sub-inspectors, and investigating complex crimes.
6. **Superintendent of Police (SP):** A senior officer who is responsible for supervising DSPs and inspectors, and overseeing the overall functioning of the police force in a district.
7. **Deputy Inspector General of Police (DIG):** A senior officer who is responsible for supervising SPs and DSPs, and overseeing the overall functioning of the police force in a range.
8. **Inspector General of Police (IG):** A senior officer who is responsible for supervising DIGs and SPs, and overseeing the overall functioning of the police force in a zone.

Career Prospects

A career in the Indian Police Force offers several benefits and opportunities, including:

1. **Job Security:** A job in the police force is secure, and officers are entitled to a pension and other benefits after retirement.
2. **Opportunities for Advancement:** The police force offers opportunities for advancement, and officers can rise through the ranks based on their performance and experience.
3. **Variety of Roles:** The police force offers a variety of roles, including investigation, law and order, traffic management, and community policing.
4. **Opportunities for Specialization:** Officers can specialize in areas such as forensic science, cybercrime, and terrorism.
5. **Sense of Satisfaction:** A career in the police force offers a sense of satisfaction, as officers have the opportunity to make a positive impact on society and serve the nation.

Challenges

A career in the Indian Police Force also comes with several challenges, including:

1. **Physical and Mental Stress:** Policing is a physically and mentally demanding job, and officers often work long hours in challenging conditions.
2. **Corruption and Politics:** The police force is often subject to corruption and political interference, which can make it difficult for officers to perform their duties effectively.
3. **Limited Resources:** The police force often faces limited resources, including inadequate funding, outdated equipment, and insufficient personnel.
4. **Public Scrutiny:** Police officers are often subject to public scrutiny, and their actions are closely monitored by the media and the public.

Conclusion

A career in the Indian Police Force is a challenging and rewarding profession that offers a unique opportunity to serve the nation and make a positive impact on society. While the job comes with several challenges, it also offers several benefits and opportunities, including job security, opportunities for advancement, and a sense of satisfaction. If you are passionate about serving the nation and making a difference in society, a career in the Indian Police Service would be ideal suited for you.

प्रिय संपादक महोदय!

सप्रेम नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का गतांक पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता हुई। 51वीं राष्ट्रीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी पर प्रस्तुत कवर स्टोरी बेहद ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक रही। विद्यार्थियों के नवाचार और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करने वाले ऐसे कार्यक्रम निश्चित रूप से बच्चों में जिज्ञासा और रचनात्मकता को बढ़ावा देते हैं।

'परीक्षा पे चर्चा' कार्यक्रम पर प्रकाशित लेख ने विद्यार्थियों को सकारात्मक सोच और तनावमुक्त रहने का संदेश दिया, जो परीक्षाओं के दबाव से जूझ रह छात्रों के लिए अत्यंत लाभकारी है। साथ ही, 'परीक्षा से घबराना कैसा' लेख ने परीक्षा के प्रति सही दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा दी।

यह अंक न केवल सूचनाओं से भरपूर था, बल्कि विद्यार्थियों के मनोबल को भी बढ़ाने वाला रहा। आशा है कि भविष्य में भी 'शिक्षा सारथी' इसी प्रकार ज्ञानवर्धक सामग्री प्रस्तुत करती रहेगी।

सादर।

बबली यादव
प्राथमिक शिक्षिका
राप्रापा पदैयावास, ज़िला- रेवाड़ी, हरियाणा

आदरणीय संपादक जी!

नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का जनवरी-फरवरी अंक पढ़कर अत्यंत संतोष हुआ। विशेष रूप से बच्चों में स्क्रीन की बढ़ती लत विषय पर प्रियंका सौरभ का लेख अत्यधिक प्रासंगिक और विचारोत्तेजक लगा। वर्तमान समय में यह समस्या बच्चों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डाल रही है, जिस पर इस लेख ने जागरूकता बढ़ाने का कार्य किया है।

इसके अलावा, सुशासन दिवस कार्यक्रम पर विद्यालय शिक्षा विभाग को सराहना मिली, यह जानकर हर्ष व गौरव की अनुभूति हुई। निपुण कार्यक्रम के अन्तर्गत शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे नवाचारों की जानकारी भी मिली। बाल सारथी की सभी रचनाएँ पसंद आईं। कुल मिलाकर पत्रिका का यह अंक विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। सचमुच 'शिक्षा सारथी' ने शिक्षा जगत में विशेष पहचान बना ली है।

सादर।

सोनू रानी
एबीआरसी
रावमा विद्यालय, होली, ज़िला- अंबाला, हरियाणा

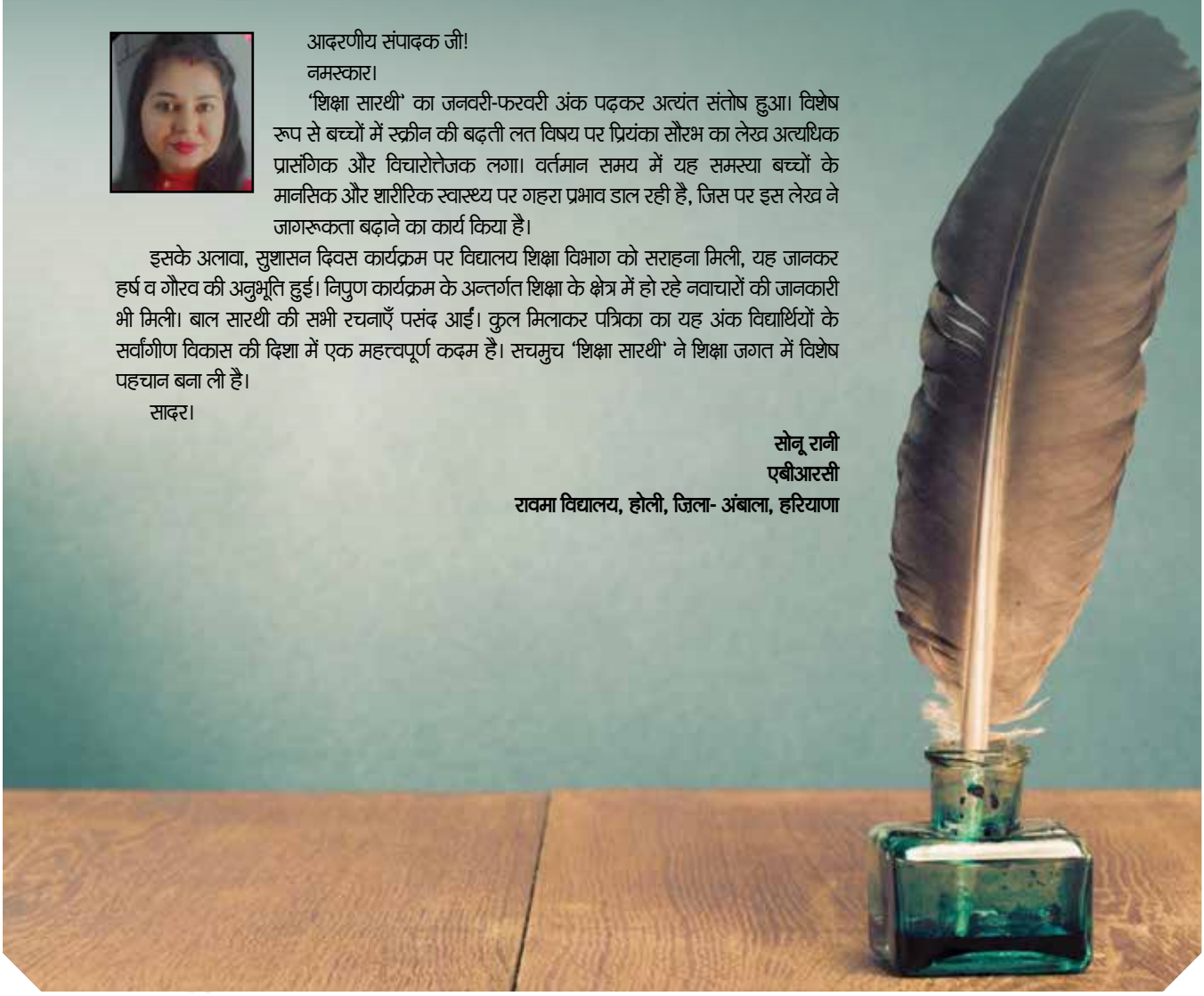

किसी को रंक या राजा, यही लम्हे बनाते हैं

हवा की सल्तनत में जो चिरागों को जलाते हैं।
वही सब तीरगी में से उजाले ढूँढ़ लाते हैं।

भरा हो हौसला, जोशो जुनूँ, शिद्दत सदा जिनमें।
वही मेहनत के रंगों से, ख्वाबों को सजाते हैं।

करोड़ों लोग हों चाहे, वही इन्सान हैं सच में।
किसी के दर्द को अपना समझ आँसू बहाते हैं।

ज़रा बरसात का पानी, अगर सैलाब हो जाये।
नदी, पुल, बाँध भी ऐसे में अक्सर टूट जाते हैं।

जिन्हें माँ-बाप ने दिन रात पलकों के तले रखा।
उन्हीं बच्चों को अब देखे महीनों बीत जाते हैं।

मोबाइल नाम के पिंजरे में अब सब कैद हैं बच्चे।
सभी आभास के आकाश में बस फड़फड़ाते हैं।

नहीं मालूम बच्चों को, वतन के शूरवीरों का।
कहाँ दादा औ दादी अब कथा-किस्से सुनाते हैं।

दिलों की बात करने को नहीं है पास में कोई।
तभी तन्हा बड़े बूढ़े अकेले बुदबुदाते हैं।

समय कैसा भी हो चाहे, सदा बैखौफ़ जो जीते।
मुसीबत में भी वो अक्सर खुशी के गीत गाते हैं।

जिन्हें बस आज से मतलब, नहीं कल का कभी सोचा।
वही सब मौज मस्ती में, कमाई को उड़ाते हैं।

नहीं यूँ ही, शिखर जाकर कोई परचम को लहराता।
खड़े पर्वत, नदी, रस्ते, सभी को आज़माते हैं।

समय की चाल को अब तक नहीं कोई समझ पाया।
किसी को रंक या राजा, यही लम्हे बनाते हैं।

कभी बरसों बरस तक भी समय कुछ भी नहीं कहता।
कभी कुछ वक्त के लम्हे, हमें सदियों जगाते हैं।

तिजारत कर रहे हो तो, सँभल कर के सदा करना।
ज़रा सी चूक होने पर, गणित सब गड़बड़ाते हैं।

-डॉ. तिलक सेठी
हिसार

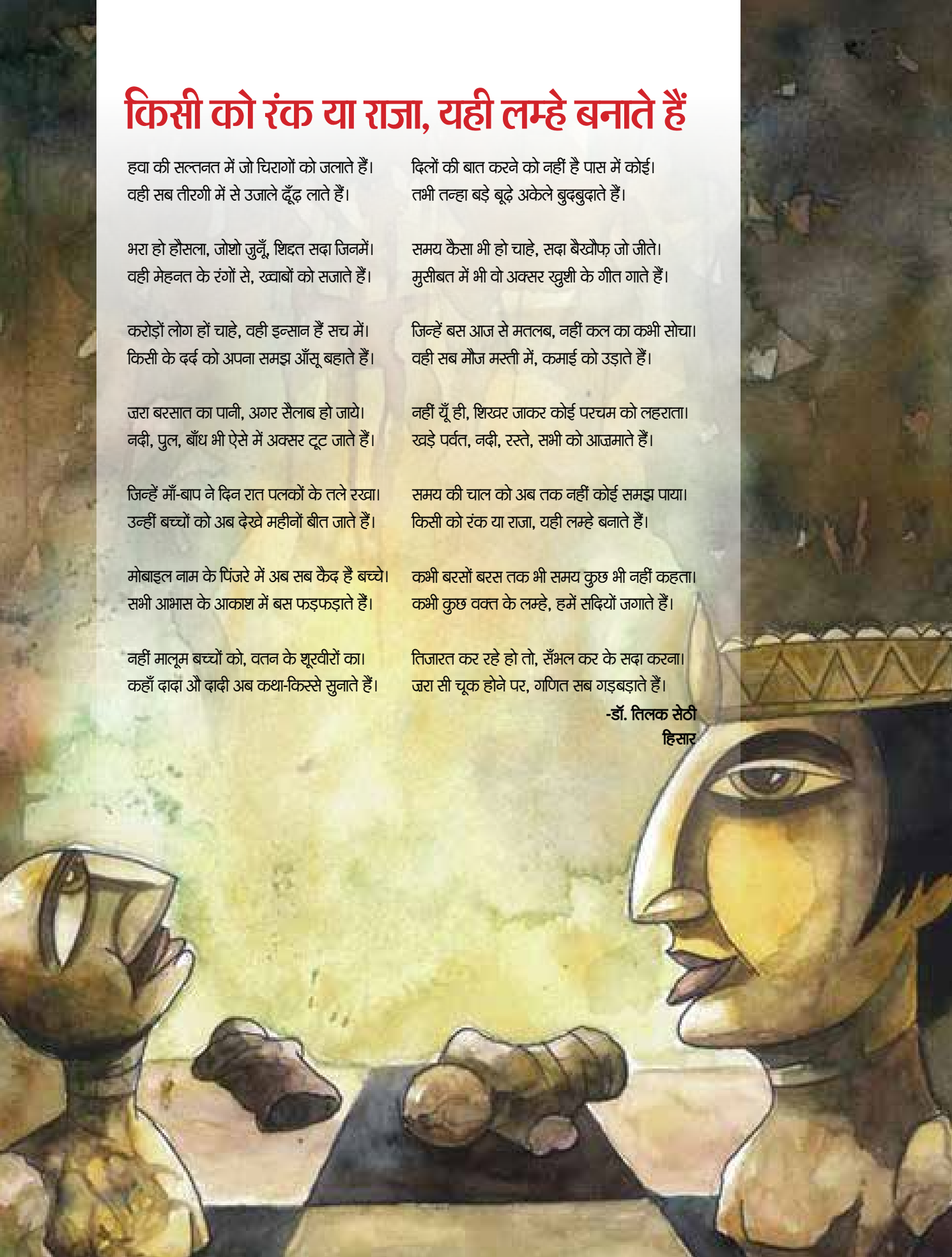

RNI NO: HARBIL/2012/52385 POSTAL REGD NO: HR/AB-102/23-25

सूरमा नहीं विचलित होते

सच है, विपत्ति जब आती है,
कायर को ही दहलाती है,
सूरमा नहीं विचलित होते,
क्षण एक नहीं धीरज खोते,
विघ्नों को गले लगाते हैं,
काँटों में राह बनाते हैं।

मुँह से न कभी उफ़ कहते हैं,
संकट का चरण न गहते हैं,
जो आ पड़ता सब सहते हैं,
उद्योग-निरत नित रहते हैं,
शूलों का मूल नसाते हैं,
बढ़ खुद विपत्ति पर छाते हैं।

है कौन विघ्न ऐसा जग में,
टिक सके आदमी के मग में?
ख़म ठोंक ठेलता है जब नर
पर्वत के जाते पाँव उखड़,
मानव जब ज़ोर लगाता है,
पत्थर पानी बन जाता है।

गुण बड़े एक से एक प्रखर,
हैं छिपे मानवों के भीतर,
मेहंदी में जैसी लाली हो,
वर्तिका-बीच उजियाली हो,
बत्ती जो नहीं जलाता है,
रोशनी नहीं वह पाता है।

-रामधारी सिंह 'दिनकर'

If undelivered Please return to c/o Shiksha Saarthi Branch, 3rd Floor, Shiksha Sadan, Sector-5, Panchkula(HR)-134114